Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيۡنَ اتَّخَذُوۡا دِيۡنَكُمۡ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡكِتٰبَ مِنۡ قَبۡلِكُمۡ وَالۡكُفَّارَ اَوۡلِيَآءَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنۡ كُنۡتُمۡ مُّؤۡمِنِيۡنَ

(सूरत अन्निसा आयत : 174)

अनुवाद :हे वे लोगो जो ईमान लाए हो। उन लोगों में से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई उनको जिन्होंने तुम्हारे दीन को हंसी ठट्ठाऔर खेल तमाशा बना रखा है और कुफ़्फ़ार को अपना दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरो यदि तुम मोमिन हो।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ نَحۡمَدُهٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِهِ الۡکَرِيۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِهِ الۡمَسِيۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 6
अंक- 45

मूल्य
575 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

5 रबीय्युल सानी 1443 हिज्री कमरी 11 नबुव्वत 1400 हिज्री शम्सी 11 नवम्बर 2021 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

ईमान उस वक़्त तक पूर्ण नहीं हो सकता जब मैं (हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) तुम्हें तुम्हारी अपनी जान से भी अधिक अज़ीज़ न हो जाऊं

उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ क्या, हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आप मुझे हर चीज़ से अधिक अज़ीज़ हैं, अतिरिक्त मेरी अपनी जान के। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया नहीं, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है। ईमान उस वक़्त तक पूर्ण नहीं हो सकता जब मैं तुम्हें तुम्हारी अपनी जान से भी अधिक अज़ीज़ न हो जाऊं। उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया फिर वल्लाह अब आप मुझे मेरी अपनी जान से भी अधिक अज़ीज़ हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, उमर! अब तेरा ईमान पूरा हुआ।

(सही बुख़ारी, किताब अल् ईमान वन्न नज़ूर, बाब क़ैफा कानत यमीनुन्नबिय्यो सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम)

जितना इन्सान सच्चाई को धारण करता है और सच्चाई से मुहब्बत करता है उतना उसके दिल में ख़ुदा के कलाम और नबियों की मुहब्बत और मार्फ़त (अनुभूति) पैदा होती है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

सच्चाई के बारे में हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी की घटना

सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमहुल्लाह अलैहि के वर्णन में वर्णित है कि जब वह अपने घर से विद्या प्राप्त करने के लिए निकले तो उनकी माता जी ने उनके हिस्सा की 80 अशर्फ़ियां उन की बग़ल के नीचे कपड़े में सी दीं और यह नसीहत की कि बेटा झूठ न बोलना। सय्यद अब्दुल कादिर जब विदा हुए,तो पहली ही मंज़िल में एक जंगल में से उनका गुज़र हुआ। जहां चोरों और डाकुओं का एक बड़ा क़ाफ़िला रहता था। चोरों का एक गिरोह उनको मिला। उन्होंने उनको पकड़कर पूछा कि तुम्हारे पास क्या है? उन्होंने देखा कि यह तो पहली ही मंज़िल में परीक्षा आ गई। अपनी माता की अन्तिम नसीहत पर ग़ौर किया और कहा कि मेरे पासा 80 अशर्फ़ियां हैं जो मेरी बग़ल के नीचे मेरी माता जी ने सी दी हैं। वह चोर यह सुनकर बहुत हैरान हुए कि यह फ़क़ीर क्या कहता है! ऐसा सच्च बोलने वाला हमने कभी नहीं देखा। वह उन्हें पकड़ कर अपने सरदार के पास ले गए और सारा क़िस्सा वर्णन किया। उसने जब सवाल किया। तब फिर सय्यद अब्दुल-क़ादिर जीलानी रज़ि ने वही उत्तर दिया। आख़िर जब उनके कपड़ों के उस हिस्सा को फाड़ कर देखा गया तो वास्तव में उस में 80 अशर्फ़ियां थीं। इन सबको हैरानी हुई और इस सरदार ने पूछा कि यह क्या बात है। इस पर फिर सय्यद अब्दुल उल-क़ादिर जीलानी रज़ि ने अपनी माता की नसीहत का वर्णन कर दिया और कहा कि मैं धर्म के ज्ञान को प्राप्त करने के लिए चला हूँ, यदि पहली ही मंज़िल पर झूठ बोलता तो फिर क्या प्राप्त करता। इस लिए मैंने सच को नहीं छोड़ा। जब उन्होंने यह वर्णन किया तो वह सरदार चीख़ें मार कर रो पड़ा और आपके क़दमों पर गिर गया और अपने गुनाहों से तौबा की। कहते हैं कि पहला मुरीद आपका वही था।

अत: सच्चाई ऐसी चीज़ है जो इन्सान को मुश्किल से मुश्किल समय में भी नजात देता है। सादी ने सच कहा है कि

कस नदीदम कि ग़म शुद अज़ राहे रास्त

अत: जितना इन्सान सच्चाई को धारण करता है और सच्चाई से मुहब्बत करता है उतना उसके दिल में ख़ुदा के कलाम और नबियों की मुहब्बत और मार्फ़त (अनुभूति) पैदा होती है। क्योंकि वे समस्त रास्तबाज़ों के नमूने और चश्मे होते हैं।كُوۡنُوۡا مَعَ الصّٰدِقِيۡنَ(अत्तौब:119)का आदेश इसी नियम पर है

सिद्दीक़ पर क़ुरआन करीम के मआरिफ का फ़ैज़ान

सार यह कि दूसरा कमाल शेष पृष्ठ 9 पर

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह सुन्नत क़ायम की है कि मुसलमान अपने सब कामों को बिसमिल्लाह से शुरू किया करें

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो बिसमिल्लाह की फ़ज़ीलत के विषय में फ़रमाते हैं

बिसमिल्लाह की फ़ज़ीलत पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने विशेष ज़ोर दिया है आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं

كُلُّ اَمۡرٍ ذِیۡ بَالٍ لَا يُبۡدَاُ فِيۡهِ بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ اَقۡطَعُ

(اربعین حافظ عبدالقادر عن ابی ہریرۃ بحوالہ الدُّرَرُالۡمَنۡثُور)

अर्थात जिस बड़े काम को बिसमिल्लाह से शुरू न किया जाए वह बे बरकत होता है। इसलिए रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह सुन्नत क़ायम की है कि मुसलमान अपने सब कामों को बिसमिल्लाह से शुरू किया करें। इसलिए एक हदीस है।

اُغۡلُقۡ بَابَكَ وَ اۡ ذۡكُرِ اسۡمَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ فَاِنَّ الشَّيۡطٰنَ لَا يَفۡتَحُ بَابًا مُغۡلَقًا وَاطۡفِیٔۡ مِصۡبَاحَكَ وَاذۡكُرِ اسۡمَ اللّٰهِ وَخَمِّرۡ اِنَاءَكَ وَلَوۡ بِعُوۡدٍ تعرضه وَ اذۡكُر اسۡمَ اللّٰهِ وَاَوۡكِ سِقَاءَكَ وَاذۡكُر اسۡمَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ

(مسند احمد بن حنبل جلد ثالث صفحه 319)

अर्थात अपना दरवाज़ा बंद करते हुए भी बिसमिल्लाह कह लिया करो और चिराग़ बुझाते हुए भी और बर्तन को ढाँकते हुए भी और अपनी मुश्क का मुँह बाँधते हुए भी। इसी तरह पत्नी के पास जाते हुए। वुज़ू करते हुए, खाना खाते शेष पृष्ठ 9 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

क़ुरआन-ए-मजीद की हिफ़ाज़त करने वाला अल्लाह तआला है

(क़ुरआन-ए-मजीद की 26 आयतों पर आरोपों के उत्तर)

मुहम्मद हमीद कौसर, नाज़िर दावत इलाल्लाह मर्कज़िया उत्तर भारत क़ादियान (भाग-1)

इस धरती पर बसने वाले करोड़ों मुस्लमानों का यह ईमान और विश्वास क़ियामत तक रहेगा कि क़ुरआन-ए-मजीद अल्लाह का कलाम है और नुज़ूल के दिन से ही अल्लाह तआला ने उसको अपने संरक्षण में रखा हुआ है और क़ियामत तक रखेगा। और यह भी एक हक़ीक़त है कि पिछली चौदह सदियों में शैतानी और पिशाचवृत्त ताक़तों ने इस कलाम इलाही में सैंकड़ों मर्तबा आपति और संदेह पैदा करने की कोशिशें कीं और यह सिलसिला अब तक जारी है। वर्तमान में ही लखनऊ के वसीम रिज़वी नामी एक व्यक्ति ने सुप्रीमकोर्ट आफ़ इंडिया में एक अर्ज़ी दाख़िल की और 26 क़ुरआन-ए-मजीद की आयतों को हज़फ़ करने का मुतालिबा किया। निवेदन पत्र देने वाले के अनुसार इन आयते में दहश्तगर्दी और इंतिहापसंदी की शिक्षा दी गई है जिस से वर्तमान समय में कुछ गिरोह नौजवानों को दहश्तगर्दी के लिए वरग़लाते हैं और उस के कथन के अनुसार ये आयते मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पवित्र जीवन में क़ुरआन-ए-मजीद का हिस्सा नहीं थीं बल्कि ख़ुलफ़ा-ए राशेदीन में से पहले तीन खलिफ़ा-ए-ने उनको क़ुरआन-ए-मजीद में शामिल किया।

अलहम्दो लिल्लाह तिथि 12 अप्रैल 2021ई. को सुप्रीमकोर्ट ने ऊपर वर्णित निवेदन ख़ारिज कर दिया और उस पर अपनी नाराज़गी का प्रकटन करते हुए पच्चास हज़ार रुपय (50,000) जुर्माना डाल दिया। इसलिए इस विषय में रोज़नामा हिंद समाचार में तिथि 13 अप्रैल 2021को निमन्लिखित ख़बर प्रकाशित हुई :

नई दिल्ली 12 अप्रैल (यू एन आई) : सुप्रीमकोर्ट ने सोमवार को क़ुरआन-ए-मजीद की 26 आयते को हटाने का निवेदन ख़ारिज कर दिया। जस्टिस रोहिंगटन फ़ाली नरेमन के प्रबंध वाली बैंच ने उतर प्रदेश शीया वक़्फ़ बोर्ड के पूर्व चेयरमैन वसीम रिज़वी की दरख़ास्त ख़ारिज कर दी और उन पर 50,000 रुपय का जुर्माना लगाया। जस्टिस नरीमन ने कहा "यह मुकम्मल तौर पर ग़ैर संजीदा रिट पटीशन है'। केस की सुनवाई के दौरान जस्टिस नरीमन ने पूछा कि क्या निवेदन देने वाला इस दरख़ास्त के बारे में संजीदा है?'' उन्होंने कहा "क्या आप दरख़ास्त की समाअत पुर इसरार कर रहे हैं? क्या आप वाक़ई संजीदा हैं?"

क़ुरआन-ए-मजीद के ख़िलाफ़ फ़ुज़ूल और तुच्छ बातें करने वाले वसीम रिज़वी की तरफ़ से पेश सीनीयर ऐडवोकेट आर. के रायज़ादा ने उत्तर दिया कि वह मद्रस्सा तालीम के कवायद के लिए अपना निवेदन सीमित कर रहे हैं। इसके बाद उसने अपने साथी का मत प्रस्तुत किया, जिस से बैंच संतुष्ट नज़र नहीं आया और उसने 50 हज़ार रुपय जुर्माना करते हुए दरख़ास्त ख़ारिज कर दी।

ख़्याल रहे रिज़वी की अर्ज़ी में कहा गया था कि इन आयते में इन्सानियत के बुनियादी उसूलों को नज़रअंदाज किया गया है और ये मज़हब के नाम पर नफ़रत, क़तल, ख़ूनख़राबा फैलाने वाला है, इसके साथ ही ये आयते दहश्तगर्दी को बढ़ावा देने वाली है। रिज़वी का यह भी कहना था कि ये क़ुरआन-ए-मजीद की आयते मद्रस्सों में बच्चों को पढ़ाई जा रही हैं, जो उनकी बुनियाद डालने का कारण हैं दरख़ास्त में कहा गया है कि क़ुरआन-ए-मजीद की इन 26 आयते में ज़ुल्म की शिक्षा दी गई है, ऐसी तर्बीयत जो दहश्तगर्दी को बढ़ावा देती है उसे रोका जाना चाहीए। (हिंद समाचार, जालंधर, तिथि 13 अप्रैल 2021पृष्ठ 2,1)

अलहमदो लिल्लाह 26 आयते याद करवाने के सिलसिला में निवेदन तो ख़ारिज हो गया परन्तु निवेदन देने वाला और उसके साथियों ने वर्णित आयते और बुख़ारी की कुछ अहादीस के हवाले से क़ुरआन-ए-मजीद के बारे में संदेह और आपत्ति अख़बार, रेडीयो, टेलीविज़न के माध्यम से पैदा करने की कोशिश की है जिससे कुछ ग़ैर मुस्लिमों के ज़हनों में यह प्रश्न पैदा हुआ कि :

(1) जब एक मुस्लमान ने क़ुरआन-ए-मजीद के बारे में तहरीफ़ और तबदील करने का आरोप लगाया है तो इस में सच्चाई किया है?

(2) दूसरी तरफ़ मुस्लमानों की नई नसल मुस्लमान होने के बावजूद अर्ज़ी देने वाला के तहरीर करदा आरोपों का उत्तर चाहती है। ताकि वे इस उत्तर की रोशनी में ख़ुद को और ग़ैरमुस्लिम दोस्तों को क़ुरआन-ए-मजीद की सदाक़त का क़ायल कर सके।

वर्णित वजूहात की बिना पर वसीम रिज़वी के तहरीर करदा आरोपों के उत्तर तहरीर कर दिए गए हैं। इस दुआ के साथ कि अल्लाह तआला इन उत्तरों को मुस्लमानों और दूसरे मज़ाहिब के अच्छी परिवर्ती वाले दोस्तों के दिलों में पैदा शूदा संदेहों के निवारण का बायस बना दे। आमीन। तथा ख़ुदा क़ुरआन-ए-मजीद के बारे में उनके ईमान को ओर मज़बूती प्रदान करे। आमीन।

आरोप नंबर 1: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जो कि 632 ई. में फ़ौत हुए अल्लाह तआला ने उन्हें इन्सानियत के लिए एक संदेश दिया था और यह क़ुरआन-ए-मजीद उनकी ज़िंदगी में नहीं बना था बल्कि आपके बाद बनाया गया।

उत्तर : हर सच्चा और हक़ीक़ी मुस्लमान यह विश्वास और ईमान रखता है कि ख़ुदा तआला ने मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर तक़रीबन 23 वर्ष के अरसा में क़ुरआन-ए-मजीद नाज़िल फ़रमाया और इसी नाज़िल करने वाले ख़ुदा ने इसी क़ुरआन-ए-मजीद में यह ऐलान और वादा सदैव के लिए फ़र्मा दिया कि :

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ (1) (सूरत अल् हिज्र, आयत नंबर 10)

अनुवाद : नि संदेह हमने ही यह ज़िक्र उतारा है और नि संदेह हम ही इस की हिफ़ाज़त करने वाले हैं। इस आयत-ए-करीमा में अल्लाह तआला ने वादा फ़र्मा दिया कि मैंने ही क़ुरआन-ए-मजीद को उतारा है और मैं ही इस का हिफ़ाज़त करने वाला और संरक्षक रहूँगा। और ज़मीन पर रहने वाले किसी इन्सान की मजाल नहीं कि वह इस में कमी बेशी कर दे। इस वादे से यह मालूम होता है कि यदि किसी ने यह जुर्रत और साहस किया कि क़ुरआन-ए-मजीद में कोई रद्द-ओ-बदल कमी या बढ़ोतरी करे उसे सर्व शक्तिमान ख़ुदा कदापि ऐसा नहीं करने देगा पिछली 14 सदियां इस पर गवाह और शाहिद हैं।

क़ुरआन-ए-मजीद के नुज़ूल और जमा करने की तारीख़

एक अनुमान के अनुसार क़ुरआन-ए-मजीद का नुज़ूल 24 नातिक़ (रमज़ान) के अनुसार 20 अगस्त 610 ई.को शुरू हुआ और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात तिथि यक्म रबीउल अव्वल11 हिज्री के अनुसार 26 मई 632 ई. तक मुख़्तलिफ़ औक़ात में नाज़िल होता रहा। इस हिसाब से आपकी नबुव्वत के दिनों की संख्यां तक़रीबन सात हज़ार नौ सौ सत्तर (7970) बनती है और क़ुरआन-ए-करीम के शब्द की मजमूई संख्यां (77924) बनती है। इस हिसाब से प्रतिदिन नुज़ूल की औसत कम-ओ-बेश नो (9) शब्द बनते हैं। तारीख़ से इलम होता है कि कभी कबार क़ुरआन-ए-मजीद की आयते अत्याधिकत नाज़िल होती थीं और कभी कबार कम। और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का तरीक़ मुबारक था कि जितनी आयते नाज़िल होतीं हैं सहाबा किराम को साथ साथ ज़बानी याद करवा देते। नुज़ूल क़ुरआन-ए-मजीद की आरंभ से ही हज़रत जिब्राईल सय्यदना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास से उस समय तक नहीं जाते जब तक आपके हाफ़िज़े में नाज़िल शूदा आयते महफ़ूज़ और याद न हो जातीं और जिब्राईल के जाने के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने सहाबा के पास आते तो उन को नाज़िल शुदा आयते साथ-साथ याद करवाते जाते और इस तरह क़ुरआन-ए-मजीद सहाबा के हाफ़िज़ा में रोज़ अव्वल से ही महफ़ूज़ होता चला जा रहा था। सहाबा के सीने और हाफ़िज़े में जो क़ुरआन-ए-मजीद जमा और महफ़ूज़ होता रहा वह ताबेईन और तबा ताबेईन ने अपने हाफ़िज़ा और सीने में महफ़ूज़ किया और वही क़ुरआन-ए-मजीद नसल दर नसल सीने से सीने आज तक मुस्लमानों के हाफ़िज़ा में महफ़ूज़ है और एक के बाद दूसरी नसल में स्थानांतरित होता चला जा रहा है। तारीख़-ए-इस्लाम में ज़िक्र है सय्यदना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी हयाते मुबारका में जो आख़िरी हज फ़रमाया इस में तक़रीबन एक लाख चौबीस हज़ार (124000) सहाबा थे और यह एक स्वभाविक और क़ुदरती बात है कि इन में से एक बड़ी संख्यां ऐसे हुफ़्फ़ाज़ की थी जिनके हाफ़िज़ा और सीने में क़ुरआन-ए-मजीद महफ़ूज़ था। फिर रमज़ानुल मुबारक में तरावीह का

शेष पृष्ठ 10 पर

ख़ुत्बः जुमअः

हज़रत उमर फ़ारूक रज़ियल्लाहु अन्हो के ख़िलाफ़त के समय में इस्लामी सलतनत का दायरा दूर दराज़ इलाक़ों की सरहदों को छूने लगा इस्लामी सलतनत पूर्व में दरयाए जेहून और दरयाए सिंध से लेकर पश्चिम में अफ़्रीक़ा के रेगिस्तानों तक और उत्तर में एशिया कोचक के पहाड़ों और अर्मानिया से लेकर दक्षिण में बहर-ए-काहिल और नूबा तक एक विश्वव्यापी मुल्क की शक्ल में दुनिया के नक़्शा पर हुई

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद फ़ारुके आज़म हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की विशेषताओं और गुणों का वर्णन

जंगे फ़रामा, फ़तह बिल्बीस बीस, फ़तह उम्मे दुनीन, मार्क फ़ुसतात, तसख़ीर-ए-सिकंदरीया, फ़तह बर्का और तुर्राबलस इत्यादि का विस्तारपूर्वक वर्णन तथा मुस्तश्रिक़ीन की ओर से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के हुक्म पर सिकंदरीया की लाइब्रेरी जलाने के घटना की विस्तारपूर्वक जाँच

याद रखें कि यह मसायब और मुश्किलात जो हैं हमें ख़ुदा तआला के क़रीब करने वाले होने चाहिएं और यही फ़ुतूहात का फिर माध्यम बनते हैं, यदि इन बातों में हम केवल डर के पीछे पीछे रहते रहें और अपनी इस्लाह की तरफ़ तवज्जा न करें तो फिर तरक़्क़ी नहीं हो सकती, हाँ जब प्रगति मिल जाएं और मसायब ख़त्म हो जाएं तब भी हमारा सम्बन्ध अल्लाह तआला से रहना चाहिए लेकिन इन दिनों में विशेषता अल्लाह तआला की तरफ़ अधिक तवज्जा होनी चाहिए और हमें अपनी रुहानी तरक़्क़ी और रुहानी बेहतरी की तरफ़ ध्यान देना चाहिए।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 01 अक्तूबर 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु एक अवसर पर एक तक़रीर में तब्लीग़ के बारे में जब वर्णन फ़रमा रहे थे तो उस वक़्त हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने की घटनाओं का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि "रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की फ़ात के बाद जो लड़ाईयां हुई हैं उनमें अक्सर औक़ात मुसलमानों की क़िल्लत होती थी।

शाम की लड़ाई में सिपाहियों की बहुत कमी थी। हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को लिखा कि दुश्मन बहुत अधिक संख्या में है। इसलिए और फ़ौज भेजने का बंद-ओ-बस्त फ़रमा दें। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने जायज़ा लिया तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो को नई फ़ौज का भर्ती करना असम्भव मालूम हुआ क्योंकि अरब के इर्दगिर्द के क़बायल के नौजवान या तो मारे गए थे या सबके सब पहले ही फ़ौज में शामिल थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने मश्वरा के लिए एक जलसा किया और इस में मुख़्तलिफ़ क़बायल के लोगों को बुलाया और उनके सामने यह मुआमला रखा। उन्होंने बताया कि एक क़बीला ऐसा है जिसमें कुछ आदमी मिल सकते हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक अफ़्सर को हुक्म दिया कि वह तुरंत उस क़बीला में से नौजवान जमा करें और हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो को लिखा कि छः हज़ार सिपाही तुम्हारी मदद के लिए भेज रहा हूँ जो चंद दिनों तक तुम्हारे पास पहुंच जाएंगे। तीन हज़ार आदमी तो अमुक अमुक क़बायल में से तुम्हारे पास पहुंच जाएंगे और बाक़ी तीन हज़ार के बराबर अम्र बिन मादी करिब को भेज रहा हूँ।'' हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि "हमारे एक नौजवान को यदि तीन हज़ार आदमी के मुक़ाबला में भेजा जाए तो वह कहेगा कि कैसी खिलाफ-ए-अक़्ल बात है। क्या ख़लीफ़ा की अक़्ल मारी गई है। एक आदमी कभी तीन हज़ार का मुक़ाबला कर सकता है! लेकिन उन लोगों के ईमान कितने मज़बूत थे। हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो को हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का पत्र मिला तो उन्होंने पत्र पढ़ कर अपने सिपाहियों से कहा ख़ुश हो जाओ कल अम्र बिन मादी करिब तुम्हारे पास पहुंच जाएगा। सिपाहियों ने अगले दिन बड़े जोश के साथ अम्र बिन मादी करिब का स्वागत किया और नारे लगाए। दुश्मन समझा कि शायद मुसलमानों की मदद के लिए लाख दो लाख फ़ौज आ रही है इस लिए वह इस क़दर ख़ुश हैं हालाँकि वह अकेले अम्र बिन मादी करिब थे। इस के बाद वह तीन हज़ार फ़ौज भी पहुंच गई और मुसलमानों ने दुश्मन को शिकस्त दी हालाँकि तलवार की लड़ाई में एक आदमी तीन हज़ार का क्या मुक़ाबला कर सकता है।'' फ़रमाते हैं कि "भाषा की लड़ाई में तो एक आदमी भी कई हज़ार लोगों को अपनी बात पहुंचा सकता है परन्तु वे लोग ख़लीफ़-ए-वक़्त की बात को इतनी एहमीयत देते थे कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अम्र बिन मादी करिब को तीन हज़ार सिपाहियों का क़ायम मक़ाम बना कर भेजा तो सिपाहियों ने यह एतराज़ नहीं किया कि अकेला आदमी किस तरह तीन हज़ार का मुक़ाबला कर सकता है बल्कि उसे तीन हज़ार के बराबर ही समझा और बड़ी शान-ओ-शौकत से इस का स्वागत किया। मुसलमानों के इस स्वागत की वजह से दुश्मन के दिल डर गए और वह यह समझे कि शायद लाख दो लाख फ़ौज मुसलमानों की मदद को आ गई है इस लिए मैदान-ए-जंग से उनके पांव उखड़ गए और वे शिकस्त खा कर निकले।'' आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि "तत्काल हमें भी इस तरह अपने दिल को इतमीनान देना होगा।"

(स्पेन और सिसली में तब्लीग़-ए-इस्लाम और जमात अहमदिया, अनवारुल उलूम, भाग 18 पृष्ठ 359-360)

यश आप रज़ियल्लाहु अन्हो बता रहे थे कि यूरोप में स्पेन में और सिसली इत्यादि में तब्लीग़ किस तरह करनी है। इस विषय में यह वाक़िया वर्णन किया। अब फ़ुतूहात-ए-मिस्र का वर्णन करता हूँ। इस में एक जंग फ़िर्मा थी। "फ़िर्मा" मिस्र का एक प्रसिद्ध शहर था। यह बहीरा रुम और पलूज़ी के दहाने के क़रीब जो दरिया-ए-नील की सात शाख़ों में से एक शाख़ थी एक पहाड़ी पर आबाद था।

(सय्यदना हज़रत फ़ारूक़ आज़म रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवादक हबीब अशअर, पृष्ठ 556-557 इस्लामी पुस्तक ख़ाना उर्दू बाज़ार कराची)

अल्लामा शिबली नुमानी के अनुसार बैतुल-मुक़द्दस की फ़तह के बाद हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो के इसरार पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो को चार हज़ार का लश्कर देकर मिस्र की तरफ़ रवाना किया लेकिन साथ यह भी हुक्म दिया कि यदि मिस्र पहुंचने से पहले मेरा पत्र मिले तो वापस लौट आना। अरीश पहुंचे थे कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का पत्र पहुंचा। जबकि इस में आगे बढ़ने से रोका था लेकिन चूँकि शर्तिया हुक्म था इसलिए हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि अब तो हम मिस्र की हद में आ चुके हैं और अरीश से चल कर फ़िर्मा पहुंचे।

(उद्धरित अल् फ़ारूक़ अज़ शिब्ली नुमानी पृष्ठ 160 दारुल इशात कराची 1991ई.)

इस्लामी जंगों पर मुश्तमिल एक किताब है अल् इक्तेफ़ा। इस में लिखा है कि जब हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो रफ़ह् स्थान तक पहुंचे तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो को हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का पत्र मिला था लेकिन आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस डर से कि इस पत्र में वापस लौटने का हुक्म न हो जैसा कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया था क़ासिद से पत्र नहीं लिया और चलते रहे यहां तक कि आप रफ़ह् और अरीश के मध्य एक छोटी बस्ती में पहुंचे और इसके सम्बन्ध में पूछा। बताया गया कि यह मिस्र की सीमा में है। अतः आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने पत्र मंगवाया और उसे पढ़ा और इस में लिखा था कि आपके साथ जो मुसलमान हैं उन्हें लेकर वापस लौट आएं तो आपने अपने साथ के लोगों से कहा कि क्या तुम नहीं जानते कि यह मिस्र में है। उन्होंने कहा जी हाँ। तो आप रज़ियल्लाहु अन्होने कहा कि अमीरुल मौमेनीन रज़ियल्लाहु अन्हो ने

हुक्म दिया है कि यदि मुझे उनका पत्र मिस्र की सरज़मीन तक पहुंचने से पहले मिल जाए तो मैं वापस लौट आऊँ और मुझे यह पत्र मिस्र की सरज़मीन में दाख़िल होने के बाद मिला है। अत: अल्लाह का नाम लेकर चलो। और एक और रिवायत में यह भी कहा जाता है कि हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो फ़लसतीन में थे और वह बिना आज्ञा के अपने साथियों को लेकर मिस्र चले गए। यह बात हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को नागवार गुज़री। अत: हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उन्हें पत्र लिखा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का पत्र हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु को उस वक़्त मिला जब वह अरीश के क़रीब थे। अत: आपने व: पत्र नहीं पढ़ा यहां तक कि आप अरीश पहुंच गए। फिर आपने पत्र पढ़ा। इस में लिखा था कि उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ से अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो के नाम। इसके बाद, यक़ीनन तुम मिस्र अपने साथियों के साथ गए हो और वहां रोमियों की बड़ी संख्या है और तुम्हारे साथ थोड़े लोग हैं। मेरी आयु की क़सम! अल्लाह तुम्हारा भला करे। बेहतर होता यदि तुम उन्हें साथ न ले जाते। अत: यदि तुम मिस्र नहीं पहुंचे तो वापस लौट आओ।(अल इक्तेफ़ा बिमा तज़मीना मिन मगाज़ी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 2 पृष्ठ 324-325 इस्तख्लाफ़ उमर बिन अल् ख़िताब, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1420)

इस यात्रा में फ़िर्मा से पहले इस्लामी लश्कर की किसी भी रूमी सिपाही से मुलाक़ात नहीं हुई थी बल्कि जगह जगह मिस्रियों ने उनका स्वागत किया था और सबसे पहले फ़िर्मा में आमना-सामना हुआ था। यह तो मुख़्तलिफ़ रिवायतें हैं लेकिन वही रिवायत सही लगती है कि अरीश मिस्र की में पहुंचने के बाद उनको पत्र मिला। नहीं तो यह नहीं हो सकता कि बहाने बनाए जाएं कि हम मिस्र पहुँचेंगे तो पत्र खोलूँगा। बहरहाल जब वह मिस्र पहुंच गए थे तो फिर आगे बढ़ना था क्योंकि फिर मोमिन का क़दम पीछे नहीं उठता। रोमियों ने यह ख़बर सुनकर कि हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ आने वाली फ़ौज मामूली संख्या और नाक़ाबिल-ए-वर्णन जंगी तैयारियों में है अधिक दिनों तक घेराव नहीं कर सकते जबकि हम उनसे अधिक संख्या रखते हैं और इस की तैयारी कर रहे हैं और उन्हें हरा करके ले जाएंगे। तो रोमियों ने यह ख़्याल किया और वह शहर में क़िला बंद हो गए। उधर हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो को रोमियों की जंग की ताक़त का इलम हो चुका था कि असलाह और संख्या में कई गुना हम पर भारी हैं। इसलिए आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़िर्मा पर क़ाबिज़ होने के लिए योजना बनाई कि अचानक हमला करके फ़सील के दरवाज़ों को खोल दिया जाए या फिर उस वक़्त तक सब्र के साथ घेराव जारी रखा जाए जब तक कि शहरियों की ख़ुराक ख़त्म न हो जाए और भूख से बेताब हो कर बाहर न निकल आएं। इसलिए घेराव कर लिया। उधर मुसलमानों का घेराव सख़्त से सख़्त-तर होता जा रहा था और इधर रूमी भी अपनी ज़िद से पीछे नहीं हट रहे थे। इस तरह घेराव कई महीने जारी रहा। कभी कभी रूमी फ़ौज बाहर आती और दो-चार झड़पें करके पीछे हट जाती। इन झड़पों में मुसलमान ही ग़ालिब रहते। एक दिन रूमी अफ़्वाज की एक जमात बस्ती से बाहर निकल कर मुसलमानों से लड़ने निकली। मुक़ाबले में मुसलमान विजय रहे और रूमी हार कर बस्ती की तरफ़ भागे। मुसलमानों ने उनका पीछा किया और दौड़ने में काफ़ी तेज़ी का सबूत दिया और कुछ लोगों ने दरवाज़ों तक रोमियों के पहुंचने से पहले ही वहां पहुंच कर फ़सील का दरवाज़ा खोल दिया और फ़त्हे मुबीन का रस्ता साफ़ कर दिया।

(उद्धरित सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब अज़ अल्-सलाबी, उर्दू पृष्ठ 755,756 अल् फुर्क़ान ट्रस्ट ख़ान गढ़ पाकिस्तान)

फ़तह बिल्बीस, यह किस तरह हुई। फ़िर्मा के बाद हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो ने बिल्बीस का रुख किया तो रूमी फ़ौज ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो का रास्ता रोक लिया। बिल्बीस फ़ुसतात से तक़रीबन तीस मील दूर शाम के रस्ते पर एक शहर है। बहरहाल रस्ता रोक लिया ताकि मुसलमान बाबिल्यून के क़िला तक न पहुंच सकें। बाबिल्यून नाम पुराने शब्दकोश में मिस्र के घरों के लिए इस्तिमाल होता है विशेषता जहां फ़ुसतात आबाद हुआ उसे पहले बाबिल्यून कहा जाता था। रूमी फ़ौज यहीं लड़ना चाहती थी लेकिन हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनसे कहा तुम उस वक़्त तक जल्दी न करो जब तक हम अपनी बात तुम्हारे सामने रख न दें ता कि कल बहाने वाली कोई बात न रह जाए। फिर कहा कि तुम अपने पास से अबू मर्यम और अबू मरयम को मेरे पास प्रतिनिधि बना कर भेजो। इसलिए वे लोग लड़ने से रुक गए और इन दोनों सफ़ीरों को भेज दिया। ये दोनों प्रतिनिधि बिल्बीस वालों के राहिब थे। हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनके सामने इस्लाम लाने या जिज़्या देने की तजवीज़ रखी और साथ मिस्र वालों के बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहिस्सलाम अलैहि वसल्लम का यह फ़रमान भी पेश किया कि तुम मिस्र को फ़तह करोगे। वह ऐसा मुलक है जहां क़ीरात का नाम चलता है। अत: जब तुम उसे फ़तह कर चुकों तो उस के रहने वालों से एहसान का व्यवहार करना क्योंकि उनके लिए ज़िम्मेदारी और सिलारहमी है या फ़रमाया कि ज़िम्मेदारी और मुसाहरत है। इन दोनों सफ़ीरों ने यह बात सुनकर कहा यह बहुत दूर का रिश्ता है, उसे नबी ही पूरा कर सकते हैं। हमें जाने दो। हम वापस आ के बताएँगे। हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा मुझ जैसे व्यक्ति को धोखा नहीं दिया जा सकता है। मैं तुम्हें तीन दिन की मोहलत देता हूँ आप लोग अच्छी तरह मुआमले पर ग़ौर कर लें। दोनों प्रतिनिधियों ने कहा कि एक दिन की और मोहलत दे दें। आपने उन्हें मज़ीद एक दिन की मोहलत दे दी। दोनों प्रतिनिधि लौट कर किब्तियों के सरदार मक़ूक़स और रूम के बादशाह की तरफ़ से मिस्र के हाकिम अर्त्बून के पास आए और मुसलमानों की बात उनके सामने रखी। अर्त्बून ने मानने से इनकार कर दिया और जंग का पुख़्ता इरादा करके रातों रात उसने मुसलमानों पर हमला कर दिया। अर्त्बून के इस लश्कर की संख्या बारह हज़ार वर्णन की जाती है। मुसलमानों की अच्छी ख़ासी संख्या इस युद्ध में शहीद हुई और रोमियों के एक हज़ार सिपाही क़तल और तीन हज़ार सिपाही गिरफ़्तार हुए और अर् मैदान छोड़कर भाग गया और कुछ ने कहा कि वह इसी जंग में मारा गया। मुसलमानों ने उसे उसके लश्कर समेत सिकंदरिया तक शिकस्त दी। इतिहासकार इस बात पर सहमत हैं कि मुसलमान बिल्बीस में एक महीना तक रहे। इस दौरान लड़ाई होती रही और आख़िर में फ़तह मुसलमानों को हुई लेकिन इस बात में उनका मतभेद है कि यह जंग शदीद थी या कम।

(सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब अज़ सलाबी पृष्ठ 757-758 प्रकाशन अल् फुर्क़ान ट्रस्ट ख़ान गढ़ पाकिस्तान) (उद्धरित हज़रत उमर फ़ारूक़ आज़म रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवादक हबीब अशअर, पृष्ठ 564-565 इस्लामी पुस्तक ख़ाना उर्दू बाज़ार लाहौर)(الاکتفاء بما تضمنه من مغازی رسو ل اللہ... جزء2 पृष्ठ 346 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1420) (मौअज्मुल बुल्दान, भाग 1 पृष्ठ 567 बिल्बीस, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत) (एटलस फ़ुतूहात इस्लामिया, भाग 2 पृष्ठ 225 दारुस्सलाम रियाज़ 1428)

इस जंगी कश्मकश के दौरान एक ऐसा वाक़िया पेश आया जो मुसलमानों की बुद्धिमता और अख़लाक़ी बरतरी की दलील है। वाक़िया इस प्रकार है कि जब बिल्बीस में अल्लाह तआला ने मुसलमानों को फ़त्हा नसीब फ़रमाई तो इस में मक़ूक़स की लड़की गिरफ़्तार हुई जिसका नाम अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हा था। वह अपने बाप की चहीती बेटी थी। उसका बाप कस्तंतीन बिन हर्क़ल से उससे शादी करना चाहता था। वह इस शादी पर राज़ी नहीं थी। इसलिए वह अपनी ख़ादिमा के साथ सैर-ओ-तफ़रीह के लिए बिल्बीस आई हुई थी। बहरहाल जब मुसलमानों ने उसे गिरफ़्तार किया तो हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो ने समस्त सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हु की एक मजलिस बुलाई और उन्हें अल्लाह तआला का यह फ़रमान सुनाया कि هَلْ جَزَاءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ (अल् रहमान:61) क्या एहसान का बदला एहसान के अतिरिक्त कुछ और भी हो सकती है? फिर इस आयत अर्थात هَلْ جَزَاءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ के हवाले से कहा कि मक़ूक़स ने हमारे नबी अलैहिस्सलाम अलैहि वसल्लम के पास भेंट भेजी थी। मेरी राय है कि इस लड़की और इस के साथ जो अन्य महिलाएं हैं और उस के सेवक हैं और जो माल हमें मिला है वह सब कुछ मक़ूक़स के पास भेज दो। सब ने अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो की राय को दरुस्त क़रार दिया। फिर अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो ने मक़ूक़स की बेटी अरमानूस को उसके समस्त जवाहरात, अन्य महिलाएं और ख़िदमत गुज़ारों के साथ निहायत इज़्ज़त और सम्मान से उस के बाप के पास भेज दिया। वापस होते हुए उस की ख़ादिमा ने अरमानूस से कहा हम हर तरफ़ से अरबों के घेरे में हैं। अरमानूस ने कहा मैं अरबी ख़ेमे में जान और इज़्ज़त को महफ़ूज़ समझती हूँ लेकिन अपने बाप के क़िला में अपनी जान को महफ़ूज़ नहीं समझती। फिर जब वह अपने बाप के पास पहुंची तो उस के साथ मुसलमानों का बरताव देखकर वह बहुत ख़ुश हुआ।

(सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब अज़ अली मुहम्मद सलाबी, उर्दू अनुवादक, पृष्ठ 758-759 प्रकाशन अल् फुर्क़ान ट्रस्ट ख़ान गढ़ पाकिस्तान)

फिर उम् दूनीन एक जगह है, वहां की फ़तह का वर्णन है। बिल्बीस की फ़तह के बाद हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो सहरा की सरहद पर पेशक़दमी करते हुए उम् दूनीन की बस्ती के क़रीब जा पहुंचे जो दरिया-ए-नील पर ख़लीज तुराजन के स्रोत के पास स्थित था। यह ख़लीज सुइज़ के क़रीब मिस्र के शहर को बहीरा रुम से मिलाती थी जहां आजकल क़ाहिरा का मुहल्ला उज़बेकिया है वहीं उस ज़माने में उम् दूनीन की बस्ती थी जिसे रोमियों ने क़िला बंद कर रखा था। इस के क़रीब दरिया-ए-नील का घाट था और इस घाट पर बहुत सी कश्तियां खड़ी रहती थीं। यह बस्ती बाबिल्यून के उत्तर में थी जो शहर-ए-मिस्र का सबसे बड़ा क़िला था। इस लिहाज़ से उम् दूनीन को मिस्रियों के इस महबूब इलाक़े की, जो पिछले ज़मानों के फ़िरऔनों की राजधानी भी रह चुका था, सबसे पहली दिफ़ाई चौकी कहा जा सकता है। उम् दूनीन के क़रीब जा कर मुसलमानों ने पड़ाव डाला। रोमियों ने क़िला बाबिल्यून में अपनी बेहतरीन फ़ौज पहुंचा दी थी और उम् दूनीन के क़िला को ख़ूब अच्छी तरह मज़बूत करके जंग के लिए तैयार हो गए थे। जासूसों की ख़बरों से हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो को अनुमान हो गया कि उनकी फ़ौज क़िला बाबिल्यून की फ़तह या उसके घेराव के लिए नाकाफ़ी है। उन्होंने एक क़ासिद के हाथ एक पत्र मदीना भेजा और इस में अपनी यात्रा मिस्र के हालात, क़िलों की तफ़सीलात और उन पर हमला करने के लिए सहायता की ज़रूरत का प्रकटन किया। उधर फ़ौज में यह ऐलान करा दिया कि सहायता करने वाली फ़ौजें बहुत जल्द पहुंचने वाली हैं। इस के बाद उम् दूनीन की तरफ़ बढ़े और इस का घेराव करके क़िला में आहार और फ़ौज की आवश्यक चीज़ों की रसद रोक दी। क़िला बाबिल्यून में जो रूमी थे उन्होंने इधर आने की कोशिश नहीं की क्योंकि बिल्बीस में अर्तबून का परिणाम देख चुके थे और वे जानते थे कि अरबों से खुले मैदान में लड़ना उनके बस की बात नहीं है। उम् दूनीन की फ़ौजें जबकि कभी-कभार निकलतीं और नाकाम झड़पों के बाद वापस हो जातीं। कई हफ़्ते इसी तरह गुज़र गए। इसी अस्ना में ख़बर मिली कि ख़िलाफ़त के दरबार में से पहली मदद की फ़ौज रवाना कर दी गई और वह आजकल में पहुंच सकती है। इस ख़बर से मुसलमानों की हिम्मत और ताक़त में बढ़ोतरी हो गई।

(हज़रत उमर फ़ारूक़-ए-आज़म रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवादक अशअर, पृष्ठ 567-570 इस्लामी पुस्तक ख़ाना उर्दू बाज़ार लाहौर)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस्लामी लश्कर की मदद के लिए चार हज़ार सिपाही भेजे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हर हज़ार आदमी पर एक अमीर निर्धारित किया। इन अमीरों के नाम हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत मिक़दाद बिन अस्वद रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत मस्लमा बिन मुखल्लद रज़ियल्लाहु अन्हु थे। एक कथन के अनुसार हज़रत मस्लमा बिन मुखल्लद रज़ियल्लाहु अन्हु की जगह खारजा बिन हुज़ाफा अमीर थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह सहायता भेजने के साथ हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो को पत्र लिखा कि अब तुम्हारे साथ 12 हज़ार मुजाहिदीन हैं। यह संख्या कमी की वजह से कभी मग़लूब नहीं होगी। रूमी जंगजू क़िबतियों को साथ लेकर मुसलमानों का मुक़ाबला करने के लिए निकले। दोनों फ़ौजों में शदीद लड़ाई हुई। हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो ने हिक्मत-ए-अमली से अपनी फ़ौज को तीन हिस्सों में तक़सीम किया। एक हिस्सा को हमर के पहाड़ के क़रीब एक जगह पर ठहरा दिया। दूसरे हिस्से को उम् दूनीन के क़रीब दरिया-ए-नील के किनारे एक जगह पर ठहरा दिया और फ़ौज का बक़ीया हिस्सा लेकर दुश्मन के मुक़ाबले पर निकले। जिस वक़्त दोनों फ़ौजों में सख़्त लड़ाई हो रही थी हमर पहाड़ में छुपी फ़ौज ने निकल कर पीछे से हमला कर दिया जिससे दुश्मन का फ़ौजी निज़ाम दरहम-बरहम हो गया और वे उम् दूनीन की तरफ़ भागे। वहां इस्लामी फ़ौज का दूसरा हिस्सा तैयार था। उसने उनका रास्ता रोक दिया। इस तरह रूमी फ़ौज मुसलमानों की तीनों फ़ौजों के मध्य फंस गई और दुश्मन को शिकस्त हुई।

(सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ अली मुहम्मद अल् सलाबी अनुवादक, पृष्ठ 759 प्रकाशन अल् फुर्क़ान ट्रस्ट ख़ानगढ़ पाकिस्तान)

विभिन्न फ़ुतूहात के बारे में वर्णन है कि उम् दूनीन की फ़तह के बाद सबसे पहले फ़य्यूम के इलाक़े पर हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़तह हासिल की और इस इलाक़े का सरदार इस लड़ाई में क़तल हो गया। (उद्धरित सय्यदना हज़रत उमर फ़ारूक़ आज़म रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवादक हबीब अशअर, पृष्ठ 571-572 इस्लामी पुस्तक ख़ाना उर्दू बाज़ार लाहौर)

फिर अयनुल शम्स में मुसलमानों का रोमियों से मुक़ाबला हुआ। इस से पूर्व आठ हज़ार मुजाहिदीन का लश्कर बतौर सहायता हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो से आ मिला जिसकी कमान हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ में थी और इस में हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत मिक़दाद बिन अस्वद रज़ियल्लाहु अन्हु और मस्लमा बिन मुखल्लद अन्य भी थे। इस जंग में भी मुसलमानों ने फ़तह हासिल की। इसके बाद फ़यूम के पूरे राज्य पर मुसलमानों ने फ़तह हासिल की। मुसलमानों की फ़ौज के एक हिस्सा ने राज्य मनूफिया के दो शहरों अस्त्रीब और मनूफिया पर फ़तह पाई। (सय्यदना हज़रत उमर फ़ारूक़ आज़म रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवादक अशअर, पृष्ठ 573-579 इस्लामी पुस्तक ख़ाना उर्दू बाज़ार लाहौर)(एटलस फ़ुतूहात-ए- इस्लामिया, भाग 2 पृष्ठ 229 दारुस्सलाम रियाज़ 1428)

युद्ध क़िला बाबिल्यून या फ़ुसतात की फ़तह के बारे में लिखा है कि हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो उम् दूनीन की फ़तह के बाद क़िला बाबिल्यून की तरफ़ बढ़े और इस का ज़बरदस्त घेराव किया। अब इस इलाक़े का नाम फ़ुसतात है। इस के नामकरण का कारण यह है कि अरबी में ख़ेमे को फ़ुसतात कहते हैं। हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो ने क़िला को फ़तह करने के बाद जब यहां से कूच करने का हुक्म दिया तो संयोग से एक कबूतर ने हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़ेमे में घोंसला बना लिया था। जब उनकी नज़र इस पर पड़ी तो उन्होंने हुक्म दिया कि इस ख़ेमे को यहीं रहने दो और हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो ने सिकंदरिया से वापस आकर उसी ख़ेमे के क़रीब शहर बसाया इसलिए यह शहर फ़ुसतात के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

(उद्धरित अल् फ़ारूक़ अज़ नुमानी पृष्ठ 150-151 दारुल इशात कराची 2004 ई.)

क़िला में मुहाफ़िज़ दस्ते की संख्या का अंदाज़ा पाँच से छः हज़ार तक लगाया जाता था और वह हर तरह से तैयार थे। हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़िला बाबिल्यून का घेराव शुरू किया। सिकंदरिया के बाद यह बहुत मज़बूत क़िला था और पक्की ईंटों से बनाया हुआ था और चारों तरफ़ से दरिया-ए-नील के पानियों से घिरा हुआ था चूँकि दरिया-ए-नील पर वाक़्य था और जहाज़ और कश्तियां क़िला के दरवाज़े पर आकर लगती थीं इसलिए सरकारी ज़रूरतों के लिए निहायत उचित स्थान था। अरब इस मज़बूत क़िला पर हमला करने के लिए आवश्यक चीज़ों के साथ नहीं थे न वे इसके लिए तैयार थे।

(सीरत उमर फ़ारूक रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ मुहम्मद रज़ा पृष्ठ 264-265 मकतबा इस्लामिया 2010 ई.)

हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने अव्वल उस का घेराव करने की तैयारियां कर लीं। मक़ूक़स जो मिस्र का राजा था वह हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो से पहले क़िला में पहुंच चुका था और लड़ाई का बंद-ओ-बस्त कर रहा था। हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने घोड़े पर सवार हो कर ख़ंदक़ के चारों तरफ़ चक्कर लगाया और जहां-जहां ज़रूरतें थीं मुनासिब संख्या के साथ सवार और सिपाही निर्धारित किए। यह घेराव नियमित सात माह तक जारी रहा और विजय और पराजय का फ़ैसला नहीं हुआ। (उद्धरित अल् फ़ारूक़ अज़ शिबली नुमानी, पृष्ठ 150 दारुल इशात कराची 2004 ई.)

इस दौरान रूमी फ़ौज कभी कभी क़िले से बाहर आकर जंग भी करते लेकिन फिर वापस चले जाते। इस दौरान मक़ूक़स अपने सफ़ीरों को सहायता करने और धमकाने के उद्देश्य से हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो के पास भेजता रहा। हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजा और सुलह करने के लिए केवल तीन शर्तें लगा दीं कि इस्लाम लाओ, जिज़्या दो या फिर जंग होगी और कहा कि इसके अतिरिक्त किसी बात पर सुलह नहीं हो सकती। न सुलह करना। मक़ूक़स ने जिज़्या देना मंज़ूर कर लिया और इस सिलसिले में हरक़्ल से आज्ञा मांगने के लिए ख़ुद हरक़्ल के पास गया लेकिन हरक़्ल ने इसे मानने से इनकार कर दिया बल्कि मक़ूक़स से सख़्त नाराज़ हुआ और उसको सज़ा देते हुए देशनिकाला करवा दिया। (सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो का व्यक्तित्व और कारनामे अज़ अली मुहम्मद सलाबी उर्दू पृष्ठ 760 अल् फुर्क़ान ट्रस्ट ख़ान गढ़ पाकिस्तान)(उद्धरित

सय्यदना हज़रत उमर फ़ारूक़ आज़म रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवादक हबीब अशअर, पृष्ठ 582 और -584 और -590 इस्लामी पुस्तकों ख़ाना उर्दू बाज़ार लाहौर)

जब क़िला बाबिल्यून की फ़तह में अधिक ताख़ीर नज़र आई तो हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ियल्लाहु अन्हु कहने लगे कि अब में अपनी जान अल्लाह के रास्ते में भेंट करने जा रहा हूँ। मुझे उम्मीद है कि अल्लाह तआला इसी से मुसलमानों को फ़तह अता फ़रमाएगा। यह कह कर नंगी तलवार ली और सीढ़ी लगा कर क़िला की फ़सील पर चढ़ गए। चंद और सहाबा ने भी आपका साथ दिया। फ़सील पर चढ़ कर सबने एक नारा लगाया और साथ ही समस्त फ़ौज ने भी नारा लगाया जिस से क़िला की ज़मीन दहल गई। ईसाई समझ गए कि मुसलमान क़िला के अंदर घुस आए वे बदहवास हो कर भागे और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़सील से उतर कर क़िला का दरवाज़ा खोल दिया और समस्त फ़ौज अंदर आ गई और लड़ते लड़ते क़िला को फ़तह कर लिया। (सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो व्यक्तित्व और कारनामे अज़ अली मुहम्मद सलाबी अनुवाद, पृष्ठ 760 अल् फ़ुर्क़ान ट्रस्ट ख़ान गढ़ पाकिस्तान (उद्धरित अल् फ़ारूक़ अज़ शिबली नुमानी, पृष्ठ 150 दारुल इशात कराची 2004 ई.)

हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो ने उन्हें इस शर्त पर अमान दे दी कि रूमी फ़ौज अपने साथ चंद दिनों की ख़ुराक लेकर यहां से निकल जाए और क़िला बाबिल्यून में जो ज़ख़ीरा और जंगी असलाह है उन्हें हाथ नहीं लगाऐं क्योंकि वे मुसलमानों के अम्वाल-ए-ग़नीमत हैं। इसके बाद हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो ने क़िला बाबिल्यून के गुम्बदों और बुलंद और मुस्तहकम दीवारों को तोड़ दिया।

(सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो शख़सीत और कारनामे अज़ अली मुहम्मद सलाबी उर्दू अनुवाद, पृष्ठ 760 अल् फ़ुर्क़ान ट्रस्ट ख़ान गढ़ पाकिस्तान)

क़िला बाबिल्यून की फ़तह के बाद इस्लामी फ़ौज ने मिस्र में मुख़्तलिफ़ इलाक़ों और क़िलों पर फ़ुतूहात हासिल कीं जिनमें सबसे नुमायां, तर्नुत, नकवीस, सुल्तैस, किर्यून इत्यादि हैं।

(सय्यदना हज़रत उमर फ़ारूक़ आज़म रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवादक हबीब अशअर, पृष्ठ 608,605, 603, 602, इस्लामी पुस्तक ख़ाना उर्दू बाज़ार लाहौर)

सिकंदरीया की फ़तह किस तरह हुई? इस बारे में लिखा है कि फ़ुस्तात की फ़तह के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने सिकंदरीया की फ़तह की भी आज्ञा दे दी। सिकंदरीया और फ़ुसतात के मध्य किर्यून के स्थान में रोमियों के साथ शदीद जंग हुई जिस में मुसलमानों को फ़तह हुई। इस के बाद सिकंदरीया तक रूमी सामने नहीं आए। मक़ूक़स जिज़्या देकर सुलह करना चाहता था लेकिन रोमियों ने इस पर दबाओ डाला जिसके परिणाम में मक़ूक़स ने हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो को संदेश भेजा कि वे और क़िबती क़ौम इस जंग में शामिल नहीं हैं। इसलिए हमें इस में कोई हानी न पहुंचे। क़िबती इस युद्ध से अलग रहे जबकि उन्होंने इस्लामी फ़ौज का साथ दिया और मुसलमानों के लिए रास्ता ठीक करने लगे और पुल मुरम्मत करने लगे। सिकंदरीया के घेराव में भी क़िबती लोग मुसलमानों को सहायता प्रदान करते रहे। सिकंदरीया की एहमीयत का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि जिस वक़्त मुसलमानों ने सिकंदरीया को फ़तह किया उस वक़्त इस शहर को दारुल हकूमत की हैसियत हासिल थी। क़ुस्तुनतुनिया के बाद बाज़ नितीनी रूमी बादशाहत का दूसरा बड़ा शहर माना जाता था। मज़ीद इसके दुनिया का सबसे पहला तिजारती शहर था। कुछ नितीनी यह बात अच्छी तरह जानते थे कि यदि इस शहर पर मुसलमानों का ग़लबा हो गया तो उस के बहुत भयानक परिणाम सामने आएँगे। इसी परेशानी की हालत में हरक़्ल ने यहां तक कह दिया था कि यदि अरब सिकंदरीया पर ग़ालिब आ गए तो रूमी हलाक हो जाएंगे। सिकंदरीया में हरक़्ल ने मुसलमानों से लड़ने के लिए स्वयं तैयारी की थी लेकिन तैयारी के दौरान मर गया और उसका बेटा किस्तनतीन बादशाह बना। सिकंदरीया अपनी फ़सीलों की उस्तिवारी, ज़ख़ामत, महल की बनावट और मुहाफ़िज़ों की अधिकता की वजह से दिफ़ाई एतबार से अपना एक अलग स्थान रखता था। सिकंदरीया का घेराव नौ माह तक जारी रहा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को तशवीश हुई और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने पत्र लिखा कि शायद तुम लोग वहां रह कर ऐश परस्त हो गए हो अन्यथा फ़तह में इस क़दर देर नहीं होती। इस संदेश के साथ मुसलमानों में जिहाद की तक़रीर करो और हमला करो। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का यह पत्र सुनाने के बाद हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया और झंडा उनके सपुर्द किया। मुसलमानों ने निहायत शदीद हमला किया और शहर फ़तह कर लिया। उसी वक़्त हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने मदीना क़ासिद रवाना किया और उस को कहा कि जिस क़दर तेज़ जा सको जाओ और अमीरुल मोमेनीन को ख़ुशख़बरी सुनाओ। क़ासिद ऊंटनी पर सवार हुआ और मंज़िलें तै करते हुए मदीना पहुंचा। चूँकि दोपहर का वक़्त था तो इस ख़्याल से कि यह आराम का वक़्त है, ख़िलाफ़त के दरबार में जाने से पहले सीधा मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का रुख किया। संयोग से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की लौंडी इधर आ निकली और पूछा कि कौन हो और कहाँ से आए हो? क़ासिद ने कहा सिकंदरीया से आया हूँ। इस लौंडी ने उसी वक़्त जा कर ख़बर दी और साथ ही वापस आई और कहा कि चलो तुमको अमीरुल मोमेनीन बुलाते हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो बग़ैर इंतिज़ार के ख़ुद चलने के लिए तैयार हुए और चादर सँभाल रहे थे कि क़ासिद पहुंच गया। फ़तह का हाल सुनकर ज़मीन पर गिरे और सजदा शुक्र अदा किया। आप रज़ियल्लाहु अन्हो उठ कर मस्जिद में आए और मुनादी करा दी कि الصلوٰۃ جَامِعَہ। यह सुनते ही सारा मदीना उमड आया। क़ासिद ने सब के सामने फ़तह के हालात वर्णन किए। इसके बाद क़ासिद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ उनके घर गया। उसके सामने खाना पेश किया गया। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने क़ासिद से पूछा कि सीधे मेरे पास क्यों नहीं आए? उसने कहा कि मैंने सोचा कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो आराम कर रहे होंगे। फ़रमाने लगे तुमने मेरे सम्बन्ध में यह क्यों गुमान किया? मैं दिन को सोऊँगा तो ख़िलाफ़त की ज़िम्मेदारी कौन उठाएगा?

सिकंदरीया की फ़तह के साथ सारा मिस्र फ़तह हो गया। इन युद्धों में कसरत से क़ैदी बनाए गए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने समस्त क़ैदीयों के सम्बन्ध में हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु को माध्यम से पत्र इरशाद फ़रमाया कि सबको बुला कर कह दो कि उनको इख़तियार है कि मुसलमान हो जाएं या अपने मज़हब पर क़ायम रहों। इस्लाम क़बूल करेंगे तो उनको वे समस्त हुक़ूक़ हासिल होंगे जो मुसलमानों को हासिल हैं अन्यथा जिज़्या देना होगा जो समस्त ज़िम्मियों से लिया जाता है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का यह फ़रमान जब क़ैदीयों के सामने पढ़ा गया तो बहुत से क़ैदीयों ने इस्लाम क़बूल किया और बहुत से अपने मज़हब पर क़ायम रहे। जब कोई व्यक्ति इस्लाम का इज़हार करता तो मुसलमान अल्लाहु-अकबर का नारा बुलंद करते थे और जब कोई व्यक्ति ईसाइयत का इक़रार करता था तो समस्त ईसाइयों में मुबारकबाद का शोर उठता था और मुसलमान दुखी होते थे।

(उद्धरित अल् फ़ारूक़ अज़ नुमानी, पृष्ठ 162 से 165 दारुल इशात कराची 1991ई.) (उद्धरित सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ अल् सलाबी उर्दू अनुवाद, पृष्ठ 760 ता 764 अल् फ़ुर्क़ान ट्रस्ट ख़ान गढ़ पाकिस्तान)

सिकंदरीया की लाइब्रेरी जलाए जाने की घटना भी कुछ मुस्तश्रिक़ीन बड़े ज़ोर शोर से वर्णन करते हैं। इस की हक़ीक़त क्या है? सिकंदरीया की इस फ़तह के विषय में मुख़ालिफ़ीन विशेषता ईसाई लेखकों की तरफ़ से एक एतराज़ किया जाता है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने सिकंदरीया में मौजूद एक बहुत बड़े पुस्तक ख़ाने को जलाने का हुक्म दिया था और इस एतराज़ के साथ मानों यह तास्सुर पैदा करने की कोशिश की जाती है कि मुसलमान नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) किस क़दर ज्ञान और बुद्धि के मुख़ालिफ़ थे और सिकंदरीया में मौजूद इतने बड़े पुस्तकों ख़ाने को जिला दिया कि छः माह तक आग जलती रही हालाँकि अक़ल-ओ-नक़ल दोनों एतबार से यह आरोप सरासर बनावटी और जाली मालूम होता है क्योंकि जिस क़ौम को उसके रब और राहनुमा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहोअलैहिस्सलाम अलैहि वसल्लम ने यह फ़रमाया हो कि طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيْضَةٌ عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ कि इलम हासिल करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है (सुंन इब्ने माजा इफ़्तिताह अल्किताब फ़ी سنن ابن ماجه افتتاح الكتاب فى الايمان وفضائل الصحابة والعلم، باب فضل العلماء والحث على طلب العلم, , हदीस नंबर 224)

और जिसने यह आदेश दिया हो कि اُطْلُبُوا الْعِلْمَ وَلَوْ بِالصِّيْنِ कि इल्म हासिल करो चाहे चीन जाना पड़े (कन्ज़ुल उम्माल भाग 10 पृष्ठ 138 किताब

बाब अव्वल फ़ी तरग़ीब फ़ी, हदीस 28697 मोअस्ससा अल् रिसाला बेरूत1985 ई.)

और जिनके लिए क़ुरआन-ए-करीम में ज्ञान और बुद्धि और तदब्बुर-ओ-तफ़क्कुर के लिए दर्जनों आदेश और आयात मौजूद हों ऐसे लोगों पर पुस्तक ख़ाने को जलाने का आरोप लगाना अक़ल और दिरायत के उसूलों के ख़िलाफ़ है। इसके अतिरिक्त बहुत से मुहक़्क़िक़ीन जिनमें ख़ुद ईसाई और यूरोपीयन मुहक़्क़िक़ शामिल हैं उन्होंने इस बात का खंडन किया है और साबित किया है कि सिकंदरीया के पुस्तकों ख़ाने को जलाए जाने का वाक़िया सरासर बनावटी और जाली क़िस्सा है। इसलिए मिस्र के एक ज्ञानी मुहम्मद रज़ा अपनी तसनीफ़ "सीरत उमर फ़ारूक रज़ियल्लाहु अन्हो" में इस वाक़िया का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि सिकंदरीया में आग लगने का जो एतराज़ किया जाता है इस का वर्णन अबुल फ़र्ज मलती ने किया है। उसने यह वाक़िया तारीख़ की एक किताब "मुख़त्सैरुल दूवल" में किया है। यह तिथि 1226 ई. में पैदा हुआ और 1286 ई. में फ़ौत हुए। उसने लिखा है कि फ़तह के वक़्त يُوحَنَّا اَلنَّحْوِى नामक एक व्यक्ति जो क़िबती पादरी था और मुसलमानों में यहया के नाम से प्रसिद्ध हुआ, एतिक़ाद के लिहाज़ से ईसाइयों के फ़िर्क़ा याकूबिया से उसका सम्बन्ध था और बाद में ईसाइयों के अक़ीदा तस्लीस से रुजू कर लिया। उसने अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो से ख़ज़ायन मुलूकियात में से हिक्मत की पुस्तकें मांगी तो हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो ने उत्तर दिया कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से आज्ञा के बाद ही कुछ बताने के योग्य हूँगा। वैसे तो यह बिल्कुल झूठी कहानी है लेकिन फिर भी एतराज़ को रद्द करने के लिए वर्णन कर देता हूँ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने लिखा कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने जिन किताबों का वर्णन किया है यदि तो उनका मवाद अल्लाह तआला की किताब के अनुसार है तो फिर जो कुछ अल्लाह तआला की किताब में है वह हमारे लिए काफ़ी है और उन किताबों की हमें कोई ज़रूरत नहीं और यदि उनका मवाद अल्लाह तआला की किताब के विपरीत है तो फिर इन किताबों की हमें कोई ज़रूरत नहीं। लिहाज़ा आप ऐसी किताबें ज़ाए करा दें। हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो ने सिकंदरीया के हमामों पर इन किताबों की छांटी शुरू कर दी और उन्हें इन भट्टियों में जला दिया। इस तरह वे किताबें छः माह में ख़त्म हो गईं।

इस रिवायत का वर्णन न तारीख़ तिब्री में है न इब्ने असीर में है, न याक़ूबी और किंदी में, न इब्ने अब्दुल हकम और बलाज़री में और न ही इब्न-ए-खुलदून ने इस का वर्णन किया है। केवल अबुल फ़र्ज ने तेरहवीं सदी ईसवी की आधी और सातवीं सदी हिज्री के शुरू में किसी मसदर का वर्णन किए बग़ैर उसे लिखा है।

प्रोफ़ैसर बटलर ने यूहना नहवी के बारे में तहक़ीक़ की और लिखा है कि वह सुंन 642 ई. में जिस में लाइब्रेरी को आग लगने का वर्णन है ज़िंदा ही नहीं था। विश्वकोश बर्तानिया ने वर्णन किया है कि यूहना पांचवीं सदी के अंत में और छट्ठी सदी के अवायल में ज़िंदा था और यह भी मालूम है कि मिस्र सातवीं सदी के शुरू में फ़तह हुआ था। इस आधार पर प्रोफ़ैसर बटलर ने दरुस्त कहा है कि वह उस वक़्त फ़ौत हो चुका था। ये अर्थात जिसका हवाला दे रहे हैं वे तो इस वाक़िया से जो ग़लत रंग में ही बेशक वर्णन किया जाता है इस से बहुत पहले फ़ौत हो चुका था। फिर यह कि डाक्टर हुस्न इब्राहीम हसन ने प्रोफ़ैसर इस्माईल की सनद से अपने रसाले "तारीख़ अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो" में यह तहरीर किया है कि इस वक़्त दार-ए-क़ुतुब सिकंदरीया अर्थात सिकंदरीया की जो लाइब्रेरी थी वह मौजूद ही नहीं थी क्योंकि उसके दो हिस्सों में से एक बड़े हिस्से को यूलीवस क़ैसर (जुलिअस क़ैसर, जुलिअस सीज़र) (julius caesar) के लश्करों ने बिना इरादा, बग़ैर किसी उद्देश्य के और बिना वजह के सन् 47 काफ़ मीम में जला दिया था और इसकी दूसरी किस्म भी इसी तरह वर्णित ज़माने में मादूम हो गई थी और यह वाक़िया तीयूफिल (teofill) पादरी के हुक्म पर चौथी सदी में हुआ।

प्रोफ़ैसर बटलर लिखता है कि अबुल फ़र्ज का क़िस्सा तारीख़ी आधार से केवल निराधार है और हास्यास्पद है। यदि किताबें जलानी होतीं तो वह मुख़्तसर से समय में एक दफ़ा ही जल सकती थीं और यदि वह छः माह में जलाई गईं तो उनमें से बहुत सी चोरी भी हो सकती थीं। अरबों के सम्बन्ध में मारूफ़ नहीं कि उन्होंने किसी चीज़ को नष्ट किया हो। गबन (gibbon) ने लिखा है कि इस्लामी शिक्षा इस रिवायत का विरोध करती हैं क्योंकि उस की शिक्षा तो यह हैं कि जंग में यहूदीयों और ईसाइयों के मिलने वाली पुस्तकों को जलाना जायज़ नहीं और जहां तक इल्मे फ़ल्सफ़ा, शेअर और दीन के अन्य उलूम की पुस्तकों का सम्बन्ध है तो इस्लाम ने उनसे लाभ उठाना जायज़ क़रार दिया है। मुसलमानों ने मफ़्तूहा इलाक़ों में गिरजों और उनके सम्बंधित चीज़ों को नुक़्सान पहुंचाने से मना किया बल्कि ज़मियों को भी हुर्रियत-ए- दीन की आज्ञा दी थी तो क्या अक़ल स्वीकार कर सकती है कि अमीरुल मोमेनीन, सिकंदरीया का पुस्तक ख़ाना जला देने का हुक्म देंगे। (उद्धरित सीरत उमर फ़ारूक रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ मुहम्मद रज़ा, पृष्ठ 294 ता 297 मकतबा इस्लामिया लाहौर 2010 ई.)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपनी किताब "तसदीक़ बराहीन-ए- अहमदिया" में इस एतराज़ का वर्णन कर के उत्तर दिया है। आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि फ़ैलूनस हकीम और फ़ाज़िल अजल के निवदेन पर अम्र सिपहसालार फ़ौज ने अमीरुल मोमेनीन उमर ख़लीफ़ा सानी रज़ियल्लाहु अन्हो से इस पुस्तक ख़ाने के बारे में इरशाद पूछा तो ख़लीफ़ा ने लिखा तुरंत जला दिए जाएँ। छः महीने तक वे हमाम गर्म होते रहे। आप लिखते हैं ये लोग ये कहते हैं । यह तो एतराज़ केवल पादरी साहिबान की चापलूसी का परिणाम है। इस में हक़ीक़त कोई नहीं। और यदि दर्शक ध्यान दें। हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि प्रथम यह कि यदि इस्लाम की आदात में यह होता तो इस्लाम वाले फिर ख़लीफ़ा उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अपने अह्द सआदत महद में यहूद और ईसाइयों की पाक पुस्तकों को जलाते क्योंकि वही दोनों मज़ाहिब, हाँ पाक किताबों वाले मज़ाहिब मज़हब-ए-इस्लाम के पहले सम्बोधन थे। फिर मजूस पर इस्लाम का पूरा तसल्लुत हुआ परन्तु कोई तारीख़ नहीं बताती कि इस्लाम ने उनकी किताबें जलाई। यदि यह फ़ेअल इस्लाम या ख़ुलफ़ाए इस्लाम का तरीक़ होता अर्थात उनकी आदत होती तो उसके कार्य के अस्बाब हमेशा इस्लाम में मौजूद होते और इस्लाम को इस में कोई चीज़ रोक नहीं थी। हज़रत ख़लीफ़ा प्रथम रज़ियल्लाहु अन्हो हैं : दूसरी बात यह कि यदि मज़हबी किताबों का जलाना इस्लामी बादशाहों और इस्लाम के लोगों का काम होता तो यूनानी फ़लसफ़ा, यूनानी तिब, यूनानी उलूम के अनुवाद अरबी भाषा में कठिन होते। तृतीय यह कि यदि किताबों का जलाना इस्लामी लोग इख़्तियार करते तोअवश्य था कि मुकज़्ज़िब बराहीन अहमदिया, जो बराहीन अहमदिया की तक़ज़ीब कर रहा है, उसके उत्तर में हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल लिख रहे हैं नाँ कि अपने मुल्क से कोई नज़ीर देते और उन्हें सिकंदरीया में समुंद्र पार न जाना पड़ता। यहां लिखते कि हिंदुस्तान में कौन सी किताबें जली हैं। चतुर्थ यह कि सात सौ बरस से अधिक इस्लाम ने हिंदुस्तान में सलतनत की और इस अरसा में भगवत, रामायन, गीता, महाभारत और इनके समान लिंग पुराण (ling puran) मारकुंडी (Markundi) प्रसिद्ध किताबें हैं जो आज तक मज़हबी किताबें और मुक़द्दस पुस्तकें विश्वास की जाती हैं। किसी के जलाने की ख़बर कान में नहीं पहुंची बल्कि उन किताबों में से कुछ के अनुवाद हुए। अतः आश्चर्य होता है कि इन हिंदुओं ने क्योंकर समझ लिया कि मुसलमान उनकी पुस्तकों को जलाते हैं। इन्साफ़ से सोचो।

(उद्धरित तसदीक़ बराहीन अहमदिया, भाग पृष्ठ 203-204)

इस एतराज़ के उत्तर में "तसदीक़ बराहीन अहमदिया" में हज़रत मौलाना अब्दुल करीम साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी नोट लिखा है। वह लिखते हैं कि जबकि उस वक़्त तक जबकि इस वाक़िया की तहक़ीक़ नहीं की गई थी और सही हालात रोशनी में नहीं आए थे यह इल्ज़ाम मुसलमानों को दिया जाता था परन्तु अब मुंसिफ़ मिज़ाज और हक़पसंद उल्मा में ऐसे लोग बहुत कम रह गए हैं जो यह झूठा इल्ज़ाम मुसलमानों को देते हों। इस इल्ज़ाम की वजह अधिकतर द्वेष या नावाक़फ़ीयत पर आधारित थी और इस वक़्त भी जब यह इल्ज़ाम लगाने वाले के पास कोई सही सनद मौजूद नहीं थी अर्थात इस क़िस्सा के वर्णन करने वाले दो लेखक इस वाक़िया से पाँच सौ अस्सी बरस बाद पैदा हुए और कोई पहली सनद उनके पास मौजूद नहीं थी। सैंट किराए (saint croix) जिसने सिकंदरीया के पुस्तक ख़ाने की तहक़ीक़ में बहुत सी किताबें लिखी हैं इस रिवायत को बिल्कुल झूठा ठहराया है और मालूम हुआ है कि ये किताबें जूलिअस सीज़र (julius caesar) की लड़ाई में जल गई थीं।

इसलिए पलोटॉर्क (plutarch) भी "लाईफ़ आफ़ सीज़र" में लिखता है कि जूलिअस सीज़र ने दुश्मनों के हाथों में पड़ जाने के ख़ौफ़ से अपने जहाज़ों को आग लगा दी और वही आग बढ़ते बढ़ते इस हद तक पहुंच गई कि उसने

सिकंदरीया के प्रसिद्ध पुस्तकों ख़ाना-ए-अज़ीम को बिल्कुल जला दिया।

हेडन (haydn) ने अपनी किताब डिक्शनरी आफ़ डेटस रीलेटिंग टू ऑल ऐज (dictionary of dates relating to all ages) में जहां इस ग़लत रिवायत को दर्ज किया है वहां अपनी तहक़ीक़ात से यह नोट लिखा है कि यह क़िस्सा बिल्कुल संदिग्ध है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का कथन "यदि वह किताबें मुख़ालिफ़-ए-इस्लाम हैं तो जिला देनी चाहिएं" मुसलमानों ने स्वीकार नहीं किया। इस कथन को कुछ थियोफ़िलस (theophilus) सिकंदरीया के बिशप से मंसूब किया है जो 391 ई. में हुआ और कुछ ने उसे कार्डिनल ज़ीमेनेज़ (cardinal jimenez) के माथे लगाया है जो 1500 ई. में था। फिर लिखते हैं कि हमारे प्रसिद्ध जवान मर्द डाक्टर लाइटनर (dr.leitner) ने अपनी किताब सनीने इस्लाम में इस ग़लत रिवायत की पैरवी की है और अफ़सोस से मालूम होता है कि डाक्टर साहिब मौसूफ़ को अपनी तहक़ीक़ात में धोखा हुआ है।

डरेपर साहिब, जान विलियम डरेपर (john william draper) ने प्रसिद्ध किताब में पहले इस कथन को ग़लत रावियों से नक़ल किया है लेकिन बाद में जा कर इस कथन की ग़लती को स्वीकार किया है और लिखा है कि दरहक़ीक़त यह किताबें जोलीस सीज़र की लड़ाई में जल गई थीं और अब कामिल यक़ीन के साथ कहा जा सकता है कि यह कथन बिल्कुल बेअसल और केवल कहानी है। यदि रोने के लायक़ है तो यह सच्चा वाक़िया है, यदि जिस बात पर अफ़सोस करना चाहिए, रोना चाहिए तो यह वाक़िया सच्चा है कि कट्टर कार्डेल जीमीनेज़ (cardinal jimenez) ने 80 हज़ार अरबी क़लमी किताबें गिरनाडॉ (granada) के मैदानों में बर्बाद करने वाली आग के शोलों के हवाले कर दी थीं। जब स्पेन को उन्होंने मुसलमानों से छीना और ईसाइयों का क़बज़ा हुआ तो वहां ग़रनाता की लाइब्रेरी से 80 हज़ार किताबें उन्होंने जलाई थीं। यह है असल रोने का स्थान बजाय इस्लाम पर इल्ज़ाम लगाने के। देखो। conflict between religion and science (उद्धरित तसदीक़ बराहीन अहमदिया भाग अव्वल पृष्ठ 203 हाशिया) इस में यह हवाला दर्ज है। तो बहरहाल यह लाइब्रेरी के जलाने का हवाला था जिसका इल्ज़ाम लगाया जाता है।

फिर विजय बर्का और तुराब्लस इत्यादि का वर्णन है। मिस्र फ़तह कर लेने और वहां अमन-ओ-अमान क़ायम हो जाने के बाद अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो पश्चिम की सिम्त की ओर बढ़े ताकि इधर से मफ़्तूहा इलाक़ों के लिए कोई ख़तरा बाक़ी न रहे। क्योंकि बर्का और तराबुलस में रुम की कुछ फ़ौज क़िला बंद थी और अवसर मिलने पर लोगों को वरग़लाने से वह मिस्र में मुसलमानों पर धावा बोल सकते थे। सिकंदरीया और मराक़श के मध्य जो इलाक़ा है इस को बर्का कहते हैं। इस इलाक़े में कई शहर और बस्तिया आबाद हैं। इसलिए अम्र बिन आस बाईस हिज्री में अपनी फ़ौज लेकर बर्का की तरफ़ चले। सिकंदरीया से बर्का तक का रास्ता निहायत सर सब्ज़ो शादाब और घनी आबादी वाला था। इसलिए वहां तक पहुंचने में आप को दुश्मन की किसी साज़िश का सामना नहीं करना पड़ा और जब वहां पहुंचे तो लोगों ने जिज़्या की अदायगी पर सुलह कर ली। इस के बाद बर्का के लोग ख़ुद बख़ुद वाली मिस्र के पास जाते और अपना जिज़्या जमा करा आते । मुसलमानों की तरफ़ से किसी को उनके पास जाने कीज़रूरत नहीं पड़ती थी। ये लोग पश्चिम में सबसे अधिक सादा लोग थे। उनके यहां कोई फ़ित्ना और फ़साद नहीं था।

अम्र बिन आस यहां से निकले तो तराबुलस की तरफ़ बढ़े जो महफ़ूज़ और मज़बूत क़िलों वाला शहर था। वहां रूमी फ़ौज की बहुत बड़ी संख्या रहती थी। उसने मुसलमानों की आमद की ख़बर सुनकर अपने क़िलों के दरवाज़े बंद कर दिए और मजबूरन मुसलमानों के घेराव को बर्दाश्त करने लगे। यह घेराव एक माह तक जारी रहा लेकिन मुसलमानों को कोई विशेष सफ़लता नहीं मिली। तराबुलस के पीछे शहर से जुड़ा समुंद्र बहता था और समुंद्र और शहर के मध्य कोई फ़सील क़ायम नहीं थी। मुसलमानों की एक जमात को यह राज़ मालूम हो गया और पीछे से समुंद्र की तरफ़ से शहर में दाख़िल हो गई। उन्होंने ज़ोर से नारा-ए-तकबीर बुलंद किया। अब फ़ौज के सामने अपनी अपनी कश्तियों में भाग कर पनाह लेने के अतिरिक्त कोई और रास्ता नहीं था। वे जूंही पीछे भागे पीछे से अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो ने उन पर हमला कर दिया। उनमें से अक्सर तलवार के नीचे कर दिए गएअतिरिक्त इसके कि जो कश्तियों से भाग निकले। शहर में मौजूद सामान और जायदाद को मुसलमानों ने माल-ए-ग़नीमत के तौर पर हासिल किया।

तराबुलस से निमटने के बाद अम्र बिन आस ने अपनी फ़ौज को क़ुरब-ओ-जवार में फैला दिया। आपका इरादा था कि पश्चिम की सिम्त फ़ुतूहात मुकम्मल करके तीयूनस और अफ़्रीक़ा का रुख करें। इसलिए इस सिलसिला में सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो के पास पत्र लिखा जबकि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो इस्लामी लश्कर को नए युद्ध पर भेजने से हिचकिचाते थे और विशेषता ऐसी हालत में जबकि शाम से तराबुलस तक तेज़ी से फ़ुतूहात के बायस मफ़्तूहा इलाक़ों की तरफ़ से अभी बिल्कुल मुतमइन नहीं हुए थे। इसलिए आपने इस्लामी लश्कर को तराबुलस में ठहर जाने का हुक्म दिया।

हज़रत उमर फ़ारूक रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िलाफ़त के समय में इस्लामी सलतनत का दायरा दूर दराज़ इलाक़ों की सरहदों को छूने लगा। इस्लामी सलतनत पूर्व में जीहून के दरिया जी और सिंध के दरयाए से लेकर पश्चिम में अफ़्रीक़ा के रेगिस्तानों तक और उत्तर में एशिया के पहाड़ों और अर्मानिया से लेकर दक्षिण में काहिल के समुद्र तक और नूबा तक एक विश्वव्यापी मुल्क की शक्ल में दुनिया के नक़्शा पर नमूदार हुआ। नूबा मिस्र का दक्षिणी इलाक़ा है जो बहुत वसीअ और खुला है जिस में मुख़्तलिफ़ अक़्वाम और सभ्यता और मिल्लत और तहज़ीब और तमद्दुन ने ज़िंदगी पाई थी। अर्थात इस्लामी हुकूमत ने मिस्र के इलाक़े में ही नहीं बल्कि यह जो पूरा इलाक़ा मुसलमानों के अधीन था और वहां मुख़्तलिफ़ अक़्वाम थीं, मुख़्तलिफ़ तहज़ीब और तमद्दुन थे, उन सबने इस्लाम के साया अदल और रहमत में अमन और सुकून का जीवन गुज़ारा। वह दीन-ए- इस्लाम जिसने अपने अक़ायद और इबादात और तहज़ीब और तमद्दुन के मुख़ालिफ़ीन को हज़ारों मुख़ालफ़तों के बावजूद इस दुनिया में मुकम्मल हुक़ूक़ अता किए और उनके जीवन का पूरा पूरा सम्मान किया।

(सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो शख़सीत और कारनामे अज़ मुहम्मद सलाबी पृष्ठ 765-766)(मौअज्मुल बुल्दान, भाग 1 पृष्ठ 462 बर्का, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)(मौअज्मुल बुल्दान, भाग 5 पृष्ठ 357 नूबा, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

जंगों के दौरान मुसलमानों की इबादात का रंग कैसा होता था? इसका वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "दुनिया में हर चीज़ क़दम क़दम तरक़्क़ी करती है। बड़े बड़े काम भी तुरंत नहीं हो जाया करते बल्कि आहिस्ता-आहिस्ता होते हैं। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहिस्सलाम अलैहि वसल्लम के ज़माना में भी सारे मुसलमान तहज्जुद नहीं पढ़ते थे आहिस्ता-आहिस्ता उन्हें आदत डाली जा रही थी यहाँ तक कि फिर वह ज़माना आया कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माना में जंग के दिनों में भी जब कि साबित है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहिस्सलाम अलैहि वसल्लम भी "कई दफ़ा'' छोड़ देते थे, मुसलमान तहज्जुद पढ़ते थे। मुम्किन है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहिस्सलाम अलैहि वसल्लम भी जंग के दिनों में तहज्जुद के लिए उठा करते हों परन्तु यह साबित है कि "कई दफ़ा'' नहीं भी उठते थे लेकिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने में मुसलमान जंग के दिनों में भी तहज्जुद पढ़ते थे यहाँ तक कि एक दफ़ा जब हरक़्ल ने उन पर रात का हमले का इरादा किया तो इस पर ख़ूब बेहस हुई और आख़िर यही फ़ैसला हुआ कि न मारा जाए क्योंकि मुसलमानों पर रात का हमला करना बेसूद है। इस लिए कि वह तो सोते ही नहीं बल्कि तहज्जुद पढ़ते रहते हैं। यह भी तरक़्क़ी की अलामत है जो इबतिदा में नहीं थी। शुरू शुरू में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहिस्सलाम अलैहि वसल्लम को इस के लिए बहुत तहरीक-ओ-तहरीस की ज़रूरत पेश आती थी परन्तु बाद में आहिस्ता-आहिस्ता कमज़ोर भी इस के आदी गए।''

(ख़ुत्बाते महमूद, भाग 13 पृष्ठ 189)

ख़ुलफ़ाए राशिदीन के दौर में होने वाली जंगों का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि "इस्लाम ने केवल मुक़ाबले का हुक्म ही नहीं दिया बल्कि कुछ मस्लहतों के अधीन ज़ुलम को बर्दाश्त करने की भी हिदायत दी है।

इसलिए जहां अल्लाह तआला की तरफ़ से यह आज्ञा है कि यदि तुम्हें कोई व्यक्ति थप्पड़ मारे तो तुम भी उसे थप्पड़ मॉरो। वहां उसने यह भी कहा है कि यदि तुम मुक़ाबला करना मस्लिहत के ख़िलाफ़ समझो तो तुम चुप रहो और थप्पड़ का थप्पड़ से उत्तर मत दो। अत: वह दलील जो आम तौर पर इन जंगों के सम्बन्ध में पेश की जाती है इस से हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो , हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो पर दुश्मन

के इल्ज़ाम का दिफ़ा तो हो जाता है। यह तो पता लग जाता है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ज़ुलम नहीं किया बल्कि क़ैसर ने ज़ुलम किया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ज़ुलम नहीं किया बल्कि किसरा ने ज़ुलम किया। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने ज़ुलम नहीं किया बल्कि अफ़ग़ानिस्तान और बुख़ारा की सरहद पर रहने वाले क़बायल और कु दुईत्यादि ने ज़ुलम किया लेकिन इस बात की दलील नहीं मिलती कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनको माफ़ क्यों नहीं कर दिया? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनको माफ़ क्यों नहीं कर दिया? हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनको माफ़ क्यों नहीं कर दिया? जब वे मुक़ाबले के लिए निकले थे तो वे क़ैसर से कह सकते थे कि तुम्हारी सिपाही से अमुक ग़लती हो गई है यदि उसके सम्बन्ध में तुम्हारी हुकूमत हमसे माफ़ी तलब करे तो हम माफ़ कर देंगे और यदि माफ़ी तलब न करे तो हम लड़ाई करेंगे। उन्होंने क़ैसर के सामने यह पेश नहीं किया कि तुमसे या तुम्हारी फ़ौज के एक हिस्सा से अमुक अवसर पर ज़ुलम हुआ है और चूँकि हमारी तालीम यह भी है कि दुश्मन को माफ़ कर दो इस लिए यदि तुम माफ़ी माँगो तो हम माफ़ करने के लिए तैयार हैं बल्कि जब उसने ज़ुलम किया वह "(मुसलमान)" तुरंत उस के मुक़ाबले के लिए (जंग के लिए)" खड़े हो गए और फिर उस के मुक़ाबला को जारी रखा" इस मुक़ाबले को जारी रखा।" जब किसरा के सिपाहियों ने इराक़ी सरहद पर हमला किया तो सयासी तौर पर इस के बाद सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो और किसरा के मध्य जंग बिल्कुल जायज़ हो गई लेकिन अख़लाक़ी तौर पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो किसरा को यह भी कह सकते थे कि शायद तुमने इस हमले का हुक्म नहीं दिया हो बल्कि सिपाहियों ने ख़ुद बख़ुद हमला कर दिया हो इस लिए हम इस हमला को नज़रअंदाज करने के लिए तैयार हैं बशर्ति कि तुम हमसे माफ़ी माँगो और इस कार्य पर शर्म का इज़हार करो परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। इसी तरह हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने ज़माना में दुश्मनों को यह नहीं कहा कि तुमने ज़ुलम तो किया है लेकिन चूँकि हमारा मज़हब ज़ुलम की माफ़ी की भी तालीम देता है इस लिए हम तुम्हें माफ़ करते हैं बल्कि वह तुरंत उस ज़ुलम का मुक़ाबला करने के लिए खड़े हो गए और लश्कर भेजे, लड़ाई की और फिर उस लड़ाई को जारी रखा। आख़िर इस की क्या वजह थी? "हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं" यदि हम ग़ौर करें तो हमें मालूम हो सकता है कि इस की वजह सिवाए इसके और कोई नहीं थी कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो जानते थे कि जब भी बैरूनी भय कम हुआ अंदरूनी फ़सादाद शुरू हो जाएंगे। वे समझते थे कि क़ैसर ने हमला नहीं किया बल्कि ख़ुदा ने हमला किया है ताकि मुसलमान इस मुसीबत के माध्यम से अपनी इस्लाह की तरफ़ तवज्जा करें और अपने अंदर नई ज़िंदगी और नया तग़य्युर पैदा करें। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो जानते थे कि किसरा ने हमला नहीं किया बल्कि ख़ुदा ने हमला किया है ताकि मुसलमान ग़ाफ़िल, सुस्त हो कर दुनिया में लीन न हो जाएं बल्कि हर वक़्त बेदार और होशयार रहें। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो जानते थे कि कुछ क़बायल ने मुसलमानों पर हमला नहीं किया बल्कि ख़ुदा ने हमला किया है ताकि मुसलमान बेदार हों और उनके अंदर एक नई रूह और एक नई ज़िंदगी पैदा हो।"

(ख़ुत्बाते महमूद, भाग 30 पृष्ठ 175-176)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने एक ख़ुतबे में यह वर्णन फ़रमाया था। इस बुनियाद पर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस में आगे फिर यह भी ऐलान फ़रमाया है, जमात को नसीहत फ़रमाई है कि मसायब आते हैं, मुश्किलात में से गुज़रना पड़ता है ताकि रुहानी तरक़्क़ी हो। और इस उसूल को यदि हम आज भी याद रखना चाहते हैं तो फिर याद रखें कि यह मसायब और मुश्किलात जो हैं हमें ख़ुदा तआला के क़रीब करने वाले होने चाहिएं और यही फ़ुतूहात का फिर माध्यम बनते हैं। यदि इन बातों में हम केवल डर के पीछे पीछे रहते रहें और अपनी इस्लाह की तरफ़ तवज्जा नहीं करें तो फिर तरक़्क़ी नहीं हो सकती। हाँ जब प्रगति मिल जाएं और मसायब ख़त्म हो जाएं तब भी हमारा सम्बन्ध अल्लाह तआला से रहना चाहिए लेकिन इन दिनों में विशेषता अल्लाह तआला की तरफ़ अधिक तवज्जा होनी चाहिए और हमें अपनी रुहानी तरक़्क़ी और रुहानी बेहतरी की तरफ़ तवज्जा देनी चाहिए। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने यही लिखा है कि यदि हमने इस बात को नहीं समझा तो कुछ नहीं समझा और यही बात हर एक अहमदी के लिए आजकल भी समझने वाली है।

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ में सिद्दीक़ों का कमाल है इस कमाल के प्राप्त होने पर क़ुरआन शरीफ़ के हक़ायक़ और मआरिफ़ खुलते हैं,परन्तु यह फ़ज़ल और फ़ैज़ भी अल्लाह तआला के समर्थन से आता है। हमारा तो यह धर्म है कि ख़ुदा तआला की सहायता और फ़ज़ल के बिना एक उंगली का हिलाना भी मुश्किल है। हाँ यह इन्सान का कर्तव्य है कि चेष्ठा और कोशिश करे। जहां तक इससे संभव है और उस की तौफ़ीक़ भी ख़ुदा तआला ही से चाहे। कभी इससे मायूस न हो। क्योंकि मोमिन कभी निराश नहीं होता। जैसा कि ख़ुदा तआला ने ख़ुद भी फ़रमाया। لَا یَایۡئَسُ مِنۡ رَّوۡحِ اللّٰہِ اِلَّا الۡقَوۡمُ الۡکٰفِرُوۡنَ (यूसुफ़:88) अल्लाह तआला की रहमत से काफ़िर निराश होते हैं। निराशा बहुत ही बुरी चीज़ है। असल में निराश वह होता है जो ख़ुदा तआला पर कुधारणा करता है

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 311 से 313 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

हुए, शौचालय में दाख़िल होने से पहले, वस्त्र पहनते हुए बिसमिल्लाह का कहना दूसरी अहादीस से साबित है। क़ुरआन-ए-करीम में हज़रत सुलेमान के एक पत्र का वर्णन किया गया है कि उन्होंने भी अपना पत्र बिसमिल्लाह से शुरू किया था। इसलिए आता है

(اِنَّہٗ مِنۡ سُلَیۡمٰنَ وَاِنَّہٗ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○ (نمل ع ۲

अर्थात यह पत्र सुलेमान की तरफ़ से है और बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम से शुरू होता है। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का वर्णन कर के भी क़ुरआन-ए-करीम में फ़रमाया गया है कि उन्होंने कश्ती में चढ़ते हुए अपने साथियों से फ़रमाया कि

(اِرۡکَبُوۡا فِیۡہَا بِسۡمِ اللّٰہِ مَجۡرٖىہَا وَمُرۡسٰىہَا) (ھود : 42

(तफ़सीर कबीर, भाग 1 पृष्ठ 14 प्रकाशन 2010 क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

पृष्ठ 2 का शेष

सिलसिला शुरू हुआ और रमज़ान में सारी दुनिया की बड़ी-बड़ी मसाजिद में मुकम्मल क़ुरआन-ए-मजीद के हाफ़िज़(इमाम) नमाज़ियों को बुलंद आवाज़ से क़ुरआन-ए-मजीद सुनाते हैं और एक हाफ़िज़ इमाम के पीछे खड़ा रहता है ताकि यदि इमाम किसी जगह भूल जाये तो वह उसको याद कराए। तरावीह का यह तसलसुल इंडोनेशिया से लेकर चीन और अफ़्रीक़ा, यूरोप और अमरीका उपमहाद्वीप, हिंद और पाक और अरब में जारी और सारी है और सीने से सीने में महफ़ूज़ क़ुरआन-ए-मजीद के पढ़ने में कहीं भी कोई अंतर नहीं और यह अल्लाह तआला के उस वादे की सबसे बड़ी तसदीक़ और सच्चाई है कि पिछली चौदह सदीयों में क़ुरआन-ए-मजीद सीने से सीने में नसल बंसल बड़े महफ़ूज़ तरीक़ से स्थानांतरित होता चला आरहा है और उसकी कोई मिसाल दुनिया की किसी किताब में नहीं मिलेगी और हिफ़ाज़त के इस निज़ाम को नज़र अंदाज करके कोई आरोप लगाना प्रले दर्जे की जहालत का सबूत होगा।

क़ुरआन-ए-मजीद की हिफ़ाज़त का तरीक़ा :

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का यह तरीक़ था कि जो आयते क़ुरआन-ए-मजीद शरीफ़ की नाज़िल होती जाती थीं उन्हें साथ-साथ लिखवाते जाते और ख़ुदाई तफ़हीम के अनुसार उनकी तर्तीब भी ख़ुद निर्धारित फ़रमाते जाते थे। इस बारे में बहुत सी हदीसें मिलती हैं जिनमें से दर्ज निमंलिखित हदीस बतौर मिसाल के पेश की जा है :

عَن ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ قَالَ عُثْمَانُ بْنُ عَفَّان رضی الله عنهما کان رسول الله صلی اَللہ علیہ وسلم اذا نَزَلَ علیه شیئٌ دَعَا بَعْضَ مَن کَانَ یَکْتُبُ فیقول ضَعوا هٰؤُلآءِ الاٰیات فی سورة الّتی یَذْکُرُ فیها کَذَاوَ کَذَا فَاِذَا نَزَلَتْ عَلَیْه الاٰیة فَیَقُولُ ضَعُوا هذه الاٰیة فی السُورة الّتی یذ کر فیها کذاوَ کذا

(तिरमिज़ी अबू दाउद, मसनद अहमद बा-हवाला मिश्कात बाब फ़ज़ायल क़ुरआन-ए-मजीद)

अर्थात हज़रत इब्ने अब्बास जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चचाज़ाद भाई थे रिवायत करते हैं कि हज़रत उस्मान ख़लीफ़ा सालिस (जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माना में वह्यी के लिखने वाले रह चुके थे) फ़रमाया करते थे कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर जब कुछ आयते इकट्ठी नाज़िल होती थीं आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने वह्यी के लिखने वाले में से किसी को बुला कर इरशाद फ़रमाते थे कि इन आयते को अमुक सूर: में अमुक जगह लिखों और यदि एक ही आयत उतरती थी तो फिर इसी तरह किसी वह्यी के लिखने वाले को बुला कर और जगह बता कर उसे तहरीर करवा देते थे।

जिन सहाबा से वह्यी के लिखवाने का काम लिया जाता था उनके नाम और हालात तफ़सील-ओ-ताय्युन के साथ तारीख़ में महफ़ूज़ हैं। इन में से अत्याधिकत प्रसिद्ध सहाबा ये थे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत ज़ुबैर बिन अल् अवाम रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत शर्जील बिन हसना रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाह अवाम रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अबी बिन क़ाब रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो।

(फ़तह अल-बारी, भाग 9 पृष्ठ 19 व ज़रक़ानी, भाग 4 पृष्ठ 311से 326)

इस फ़हरिस्त से ज़ाहिर है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इस्लाम के आरंभ में से ही एक विश्वसनीय जमाअत क़ुरआन-ए-मजीद की वह्यी के कलमबंद करने के लिए मौजूद थी और इस तरह क़ुरआन-ए-मजीद शरीफ़ न केवल साथ-साथ तहरीर में आता गया था बल्कि साथ ही साथ उस की मौजूदा तर्तीब भी जो कुछ उद्देश्य के अधीन नुज़ूल की तर्तीब से अलग रखी गई है क़ायम होती गई आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद जबकि नुज़ूल क़ुरआन-ए-मजीद पूर्ण हो चुका था हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ा अव्वल ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के मश्वरा से हज़रत ज़ैद बिन साबित अंसारी को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वह्यी को लिखने वाले रह चुके थे हुक्म फ़रमाया कि वह क़ुरआन-ए-मजीद शरीफ़ को एक बाक़ायदा पुस्तक की सूरत में इकट्ठा करवा कर सुरक्षित कर दें। इसलिए ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु ने बड़ी मेहनत के साथ हर आयत के मुताल्लिक़ ज़बानी और तहरीरी हर दो किस्म की पुख़्ता गवाह प्रदान करके उसे एक बाक़ायदा पुस्तक की सूरत में इकट्ठा कर दिया। (बुख़ारी किताब फ़ज़ायल अल्क़ुरआन बाब किताब नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) इसके बाद जब इस्लाम मुख़्तलिफ़ देशों में फैल गया तो फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ा सालिस के हुक्म से ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु के एकत्र करदा नुस्खे के अनुसार क़ुरआन-ए-मजीद शरीफ़ की असंख्य मुस्तनद कापियां लिखवा कर समस्त इस्लामी देशों में भिजवा दी गईं।

(बहवाला बुख़ारी किताबुल फ़ज़ायल अल्-क़ुरआन बाब जमा अल्-क़ुरआन, फ़तह भाग 9 पृष्ठ 18-17)

हिफ़ाज़त के इस दूसरे तरीक़ के बाद एतिराज़ करने वाले के आरोप का खोखलापन और बे-बुनियाद होना वाज़िह और साबित है और यह कहना कि क़ुरआन-ए-मजीद की किताब बाद में बनाई गई इंतिहाई हैरत-अंगेज़ है और कम इलमी का सबूत है। एतिराज़ करने वाले को इलम होना चाहीए कि शब्द किताब (کَتَبَ یَکْتُبُ کِتَابًا) से लिया गया है अल्लाह तआला ने सूरत अल् बकरा की इब्तिदा में ही हर क़ुरआन-ए-मजीद पढ़ने वाले को यह नवीद सुना दी "ذالك الكتاب" कि यह वह किताब है। एतिराज़ करने वाले को चाहीए शब्द किताब पर ग़ौर करे यदि यह किताब तहरीर शुदा सय्यदना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अह्द-ए- मुबारक में मौजूद नहीं थी तो उस समय मुनाफ़क़ीन और मुख़ालिफ़ीन इस्लाम जो मदीना में ही मौजूद थे यह प्रश्न उठा ताकि जिस कलाम इलाही को किताब कहा जा रहा है वह है कहाँ? वह किताबी की शक्ल में हमें नज़र नहीं आती। इन के सुकूत से वाज़िह है कि इस समय के प्रचलित तरीक़ के अनुसार क़ुरआन-ए-मजीद तहरीरी शक्ल में मौजूद था। और इस पर ज़्यादा यह है कि अल्लाह ने ऐलान फ़रमाया لَارَیْبَ فِیْهِ यह जो किताब है इस में शक की न कोई गुंजाइश है और न कोई ख़दशा और न कोई सम्भावना। हे क़ुरआन-ए-मजीद पढ़ने वाले पूरे यक़ीन और इतमिनान से उसको पढ़ और उसका अध्यन कर। इन सारे सम्भावनाी आरोपों का अल्लाह तआला ने इबतिदाई दो शब्द में निवारण फ़र्मा दिया है।

अल्लाह तआला ने हिफ़ाज़त और हद दर्जा की सावधानी को दृष्टिगत रखते हुए यह तरीक़ भी इख़तियार फ़रमाया कि हर रमज़ान में जितना क़ुरआन-ए-मजीद नाज़िल हुआ करता था हज़रत जिब्राई अलैहिस्सलाम सय्यदना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसकी दुहराई फ़रमाया करते थे और फिर जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का जीवन का आख़िरी वर्ष था तो दोनों ने यह दुहराई दो बार की। इसलिए उम्मुल मोमेनीन हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने बताया कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मेरे कान में फ़रमाया कि हर वर्ष जिब्राई मेरे साथ क़ुरआन-ए-मजीद का एक दफ़ा दौर किया करते थे लेकिन इस वर्ष दो दफ़ा दौर किया इस इससे मैं यही समझता हूँ कि मेरे सवर्गवास का समय क़रीब आ गया है।

إِنَّ جِبْرِيلَ كَانَ يُعَارِضُنِی الْقُرْآنَ كُلَّ سَنَةٍ وَإِنَّهُ عَارَضَنِی الْعَامَ مَرَّتَيْنِ(صحیح بخاری، کتاب التفسیر،باب کان جبریل یعرض القرآن)

अनुवाद : हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन करती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी इस बीमारी में जिसमें आपकी वफ़ात हुई अपनी साहबज़ादी हज़रत फ़ातिमा रज़ी अल्लाह अन्हा से फ़रमाया जिब्राई हर साल मुझ से एक-बार क़ुरआन-ए-क्रीम का दौर करते थे लेकिन इस साल उन्होंने दो दफ़ा दौर किया है।

अब इस इलाही इंतिज़ाम के बाद कोई सम्भावना वर्तमान क़ुरआन-ए-मजीद में कमी बेशी की नहीं रहती।

क़ुरआन-ए-मजीद की हिफ़ाज़त के सम्बन्ध में मुस्तश्रिक़ीन की स्वीकृति

यहां यह बताना भी आवश्यक है कि मुस्तश्रिक़ीन ने इस बात का खुल्लमखुल्ला इक़रार किया है कि आज जो क़ुरआन-ए-मजीद मुसलमानों के हाथों और उनके सीनों में महफ़ूज़ है वह वही क़ुरआन-ए-मजीद है जो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ था। कुछ की प्रतिपुष्टि निम्नलिखित हैं।

सर विलियम म्योर की राय : सर विलियम म्योर लिखते हैं कि "दुनिया के पर्दे पर शायद क़ुरआन-ए-मजीद के अतिरिक्त और कोई किताब ऐसी नहीं जो बारह सौ साल के लम्बे समय तक बिना किसी परिवर्तन और बदलाव के अपनी असली अवस्था में महफ़ूज़ रही हो।'' फिर लिखते हैं: "हमारी इंजीलों का मुसलमानों के क़ुरआन-ए-मजीद के साथ मुक़ाबला करना जो बिल्कुल ग़ैर परिवर्तन और बदलाव के चला आ रहा है। दो ऐसी चीज़ों का मुक़ाबला करना है जिन्हें आपस में कोई भी निसबत नहीं।" फिर लिखते हैं : "इस बात की पूरी पूरी अंदरूनी और बैरूनी

ज़मानत मौजूद है कि क़ुरआन-ए-मजीद अब भी इसी शक्ल-ओ-सूरत में है जिसमें कि मुहम्मद ने उसे दुनिया के सामने पेश किया था।'' फिर लिखते हैं : हम यह बात पूरे यक़ीन के साथ कह सकते हैं कि क़ुरआन-ए-मजीद की हर आयत मुहम्मद से लेकर आज तक अपनी असली और ग़ैर मुबद्दल अवस्था में चिली है।''

(बहवाला लाईफ़ आफ़ मुहम्मद दीबाचा पृष्ठ 21-22-25-26)

नोल्ड की राय : नोल्ड की जो जर्मनी का एक निहायत प्रसिद्ध ईसाई मुस्तश्रिक़ गुज़रा है और जो इस फ़न में मानों उस्ताद माना गया है। क़ुरआन-ए-मजीद के सम्बन्ध में लिखता है कि "आज का क़ुरआन-ए-मजीद ठीक उसी प्रकार वही है जो सहाबा के वक़्त में था।'' फिर है: "योरोपियन उल्मा की यह कोशिश कि क़ुरआन-ए-मजीद में कोई परिवर्तन साबित करें पूर्णत: नाकाम रही है।"

(इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका शब्द क़ुरआन-ए-मजीद)

प्रोफ़ैसर निकल्सन की राय : फिर इंग्लिस्तान का प्रसिद्ध मसीही मुस्तश्रिक़ प्रोफ़ैसर निकल्सन अपनी अंग्रेज़ी पुस्तक "अरब की अदबी तारीख़" में लिखता है: "इस्लाम की आरंभिक तारीख़ का ज्ञान हासिल करने के लिए क़ुरआन-ए-मजीद एक बेनज़ीर और हर शक-ओ-शुबा से पवित्र किताब है और यक़ीनन बुद्ध धर्म या मसीहीयत या किसी पुराने धर्म को इस किस्म का मुस्तनद असरी रिकार्ड हासिल नहीं है,जैसा कि क़ुरआन-ए-मजीद में इस्लाम को हासिल है।'' (अरब की अदबी तारीख़)

मुख़ालिफ़ीन की आरा के बाद बरमला यह कहा जा सकता है कि اَلفَضلُ مَا شَهِدَتۡ بِهِ الۡاَعۡدَاءُ फ़ज़ीलत वही होती है जिसकी दुश्मन गवाही दे। जादू वह जो सिर चढ़ कर बोलो।

आरोप नम्बर : 2

एतिराज़ करने वाले ने सही बुख़ारी की कुछ अहादीस के हवाले से तहरीर किया है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद चार सहाबा जो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के संदेश से वाक़िफ़ थे यही चार अंसार थे जिन्होंने क़ुरआन-ए-करीम को जमा किया और फिर हज़रत अबू दर्दा का वर्णन किया है।

उत्तर : एतिराज़ करने वाले के आरोप के उत्तर में तहरीर है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का जीवन के आख़िरी दिनों में एक व्यक्ति मुसल्मा (कज़्ज़ाब) नामी ने नबुव्वत का ऐलान कर दिया और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद इस्लामी हकूमत से बग़ावत कर दी। यह व्यक्ति यमामा का रहने वाला था जब उसकी बग़ावत का असर बड़ा होने लगा और यह उपद्रव का कारण बनने लगा तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसके दमन के लिए हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को तेराह हज़ार (13000) मुसलमानों का लश्कर देकर रवाना फ़रमाया। मुसल्मा कज़्ज़ाब ने अपने चालीस हज़ार (40000) अस्करियों के साथ ख़ालिद बिन वलीद के लश्कर का मुक़ाबला किया और फ़रीक़ैन में घमासान की जंग हुई और इस जंग में बहुत सारे सहाबा शहीद हो गए। उनमें से बहुत से क़ुरआन-ए-मजीद के हाफ़िज़ और क़ारी थे। बुख़ारी में रिवायत है कि हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि इस हादिसा के बाद हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझे अपने पास बुलाया। उस वक़्त हज़रत उमर बिन अल्-ख़िताब भी आपके पास थे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझे अर्थात ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु को सम्बोधित करते हुए फ़रमाया कि उमर मेरे पास आए और कहा कि जंग-ए-यमामा में क़ुरआन-ए-मजीद के बहुत से हुफ़्फ़ाज़ शहीद हो गए हैं और इसी तरह और कई स्थानात पर पुराने हुफ़्फ़ाज़ और कारी शहीद हो गए हैं और फ़ौत होते चले जा रहे हैं। इस लिए मेरा निवेदन है कि आप क़ुरआन-ए-मजीद को एक साथ करने का हुक्म दें। मैंने हज़रत उमर से कहा मैं वह काम किस तरह कर सकता हूँ जो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने नहीं किया? हज़रत उमर ने कहा ख़ुदा की क़सम फिर भी यह अच्छा है। अत: हज़रत उमर बार-बार मुझे कहते रहे। इसके बाद अल्लाह तआला ने मेरा सीना खोल दिया। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के निम्नलिखित शब्द ध्यान देने योग्य हैं।

حَتّٰی شَرَحَ اللّٰہُ صَدۡرِیۡ لِذٰلِكَ (बुख़ारी किताब अल् तफ़सीर बाब जमा अल् क़ुरआन)अर्थात अल्लाह ने क़ुरआन-ए-करीम को एक साथ करने के लिए हज़रत अबू बकर का सीना खोल दिया। सय्यदना मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ख़लीफ़ा अव्वल जिसके बारे में अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-मजीद में फ़रमाया ثَانِیَ اثۡنَیۡنِ اِذۡ هُمَا فِی الۡغَارِ (सूरत तौबा आयत : 40) दो में से एक। इसका सीना उस अल्लाह तआला ने खोला जिसने क़ुरआन-ए-मजीद नाज़िल फ़रमाया था और उसके माध्यम से वह वादा पूरा फ़रमाया

'وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوۡنَ" (سورة الحجر، آیت 11) اِنَّ عَلَیۡنَا جَمۡعَهٗ وَقُرۡاٰنَهٗ

(सूर: कय्यामा आयत ,18)

क़ुरआन-ए-मजीद को एक साथ करवाना, रखवाना और क़ियामत तक उसकी हिफ़ाज़त करते चले जाना यह अल्लाह की ज़िम्मेदारी है। इसलिए बुख़ारी की रिवायत में वर्णित है कि क़ुरआन-ए-मजीद जो मुख़्तलिफ़ स्थानों पर तहरीर शूदा था उसको एक साथ करने के लिए अल्लाह तआला ने हज़रत ज़ैद बिन साबित को शरह सदर अता फ़रमाया उन्होंने क़ुरआन-ए-मजीद खजूर (लकड़ी) की तख़्तीयों और पत्थर की सलेटों और "صدور الرجال" लोगों के सीनों में से महफ़ूज़ और एक साथ किया।

याद रहे कि हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु क़ुरआन-ए-मजीद को एक साथ करने की यह कार्रवाई कहीं छुप कर या ख़ुफ़ीया तौर पर नहीं कर रहे थे बल्कि मदीना मुनव्वरा में यह फ़रीज़ा अदा कर रहे थे और इस वक़्त इसी मदीना मुनव्वरा में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और पुराने किबार सहाबा भी मौजूद थे उनकी मौजूदगी में किसी किस्म के बढ़ाने और घटाने की कोई सम्भावना कदापि नहीं थी और न ही किसी ने ऐसे संदेह का इज़्हार किया। यह मुस्तनद मुसहफ़ क़ुरआन-ए-मजीद हज़रत उम्मुल मोमेनीन हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा जो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की साहबज़ादी सय्यदना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पत्नी थीं के पास अमानतन रखवा दिया गया और जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो के अहद-ए-ख़िलाफ़त में इस्लामी हकूमत की सीमा अजमी और ग़ैर अरबी इलाक़ों तक बढ़ गई और ग़ैर अरबी लोग और दूर दराज़ के अरब क़बायल के लोग इस्लाम में शामिल हो गए। आर्मेनिया और अज़रबाइजान भी इस्लाम में दाख़िल हो गया तो यह मुनासिब और आवश्यक समझा गया कि दूर दराज़ के इलाक़ों में क़ुरआन-ए-मजीद को सही उच्चारण और तर्तीब से पढ़ने के लिए असल मुस्तनद क़ुरआन-ए-मजीद की नकलें करवा कर मुख़्तलिफ़ देशों में भिजवा दी जाएं इसलिए हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने असल नुस्ख़ा क़ुरआन-ए-मजीद हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा से मंगवाया और हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत सईद बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु को हुक्म दिया कि इस की नकलें करें, इसलिए उन्होंने इस की नकलें तैयार कीं और यह सब कुछ मदीना मुनव्वरा में किबार सहाबा की मौजूदगी में हुआ। असल नुस्ख़ा हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा को वापस भिजवा दिया। رَدَّ عُثۡمَانُ الصُّحُفَ اِلٰی حَفۡصَةَ (बुख़ारी अल् तफ़सीर) एतिराज़ करने वाले की सारी तवज्जा हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो के समय में क़ुरआन-ए-मजीद को एक साथ करने और इस की नकलें करवाने की तरफ़ रही और ख़ुद को भी और दूसरों को भी इस मुग़ालता में डालने की कोशिश की कि ख़ुदा-न-ख़्वास्ता इन दोनों खलिफ़ाओं ने इसे तहरीर करवाया। एतिराज़ करने वाले को यह याद रखना चाहिए कि क़ुरआन-ए-मजीद हज़ारों सहाबा और ताबईन के हाफ़िज़ा और सीनों में बहुत पहले से महफ़ूज़ था यह तो एक एहतियात से संबंधित तरीक़ था जो इख़तियार किया गया।

(शेष.....)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 11 November 2021 Issue No.45

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

रोगी को शिफ़ा अल्लाह तआला देता है, इस लिए जब रोगी को देखें तो दुआ कर के देखें, जब नुस्ख़ा लिखें तो नुस्ख़े के ऊपर هوالشافی लिखें और फिर जब रोगी को देख लो तो रात को जो नमाज़ें पढ़ो तो नमाज़ में उन मरीज़ों के लिए दुआ करो जिनको देखा हो कि अल्लाह तआला उनको शिफ़ा दे।

अहमदी डाक्टरों को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की कीमती उपदेश

जमाअत अहमदिया बंगलादेश के वाकफ़ीन नौ क़ी सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमेनीन ख़लीफ़उल-मसीह अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से वर्चूअल मुलाक़ात

जमाअत अहमदिया बंगला देश के 136 वाकफ़ीन नौ को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के साथ तिथि 30 जनवरी 2021 ई. रविवार के दिन शाम सवा छः बजे से सवा सात तक ऑनलाइन मुलाक़ात करने का सौभाग्य मिला। यह मुलाक़ात जमाअत अहमदिया बंगला देश की मर्कज़ी मस्जिद में हुई।

प्यारे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने समस्त वाकफ़ीन नौ को अस्सलामो अलैकुम की शफ़क़त और मुहब्बत भरी दुआ दी। प्रोग्राम का आरंभ तिलावत क़ुरआन-ए-करीम से हुआ। डाक्टर अथर अहमद सोहाग ने सूरः आले इमरान आयात 36 ता 37 की तिलावत की और उनका बंगला अनुवाद पेश किया। प्रिय जी म इर्फ़ान रहमान ने नज़्म पेश की, प्रिय मुनादी अल्-शिफ़ात ने हदीस और प्रिय एहसान अल् इरफ़ान बिन अब्दुल वाहाब ने मलफ़ूज़ात सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से उद्धरण पेश किया। इस मुलाक़ात के दौरान असंख्य वाकफ़ीन नौ को अपने प्यारे आक़ा से प्रश्न करने और उनके बसीरत अफ़रोज़ उत्तर हासिल करने का अवसर मिला।

★ एक वाकिफ-ए-नौ प्रिय सँवार अली इर्फ़ान ने तक़दीर-ए-ख़ैर और शर के सम्बन्ध में प्रश्न पेश किया कि हम इस पर यक़ीन कैसे करें? हुज़ूर अनवर ने इसके उत्तर में फ़रमाया : तक़दीर क्या है और ख़ैर और शर से किया मुराद है? अच्छाई और बुराई। तो फिर जब यक़ीन हो जाएगी कि जो मैं अच्छा करूँगा तो अल्लाह तआला मुझे इस का अच्छा अज्र देगा। जब मैं बुरा करूँगा तो इस की मुझे सज़ा देगा। इस बात पर यक़ीन हो तो इन्सान अच्छाईयां करता है बुराईयां नहीं करता और अल्लाह तआला के हुक्मों पर अमल करने की कोशिश करता है। क़ुरआन-ए-करीम में बेशुमार हुक्म आए उन पर चलने की कोशिश करता है तो इस से यही मुराद है कि यदि तुम्हें यह यक़ीन हो जाएगा तो तुम बुराईयों से बचोगे और नेकियां करोगे। तो जब अगले जहान में जाओ तो अल्लाह तआला की सज़ा से बच सको और यह ऐसी चीज़ है जो होने वाली है। इन्सान बुराईयां करेगा तो उसे सज़ा मिलेगी, अच्छाईयां करेगा तो उसे अज्र मिलेगा इस बात पर यक़ीन होना चाहिए। और जब यह यक़ीन हो तो इन्सान फिर नेकियां करता है और बुराईयों से बचता है और क़ुरआन-ए-करीम का जो हुक्म है उस पर अमल करता है। इस से यह मुराद है।

★ एक और वाकिफ-ए-नौ प्रिय नुरुद्दीन अहमद ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि हमें क़ुरआन-ए-मजीद क्यों पढ़ना चाहिए और दूसरा यह कि अल्लाह तआला ने कौरोना वायरस क्यों दिया? हुज़ूर अनवर ने इस के उत्तर फ़रमाया : तुम किस क्लास में पढ़ते हो? उसने अर्ज़ किया कि तीसरी क्लास में। हुज़ूर ने फ़रमाया तुम स्कूल में क्यों पढ़ते हो? इसलिए कि तुम पढ़ते जाओ और अच्छी तालीम हासिल करो और कुछ बन सको। इसी तरह अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम हमें एक मुकम्मल शरीयत के तौर पर दिया ताकि हम प्रतिदिन उसे पढ़ें और इस पर अमल करें और इसकी अच्छाईयों को इख़तियार करें और इस में वर्णित बुराईयों से रुकें। इसके अतिरिक्त क्योंकि यह अल्लाह तआला की किताब है उसको पढ़ने का अल्लाह तआला सवाब भी देता है, अज्र देता है। जब इन्सान अल्लाह मियां के पास जाता है तो अल्लाह तआला ने तुम्हारे खाते में तुम्हारी सारी नेकियां लिखी होती हैं।

कौरोना वायरस क्यों दिया? दुनिया में कई बीमारियां आती हैं, कभी टाईफ़ाईड की बीमारी, कभी फ़लू हो जाता है कभी कोई और बीमारी हो जाती है। तो यह जो कई दफ़ा अल्लाह तआला ऐसी बीमारीयां जो pandemic हो जाती हैं, जो दुनिया में हर जगह फैल जाती हैं इसलिए भेज देता है ताकि इन्सानों को याद रहे कि ख़ुदा तआला है और वे अल्लाह तआला की तरफ़ आएं और अपने गुनाहों की माफ़ी मांगें और गुनाहों से बचने की कोशिश करें और अच्छे काम करें। तो अल्लाह तआला इन्सानों को समझाने के लिए भी,थोड़ा सा सबक़ देने के लिए कि अच्छे काम करो कई दफ़ा थोड़ी थोड़ी सज़ा देता है। यह दुनिया में सज़ा मिल जाती है। जैसे तुम्हारे उस्ताद कई दफ़ा तुम्हें सज़ा देते हैं। तो यदि हम अच्छे काम करेंगे तो ये कौरोना वायरस ख़त्म हो जाएगा, यदि हम अल्लाह तआला को राज़ी करेंगे और उस से माफ़ी माँगेंगे तो इंशा-ए-अल्लाह यह ख़त्म हो जाएगा और अल्लाह तआला हमें फिर सेहत मंद ज़िंदगी अता फ़रमाएगा। लेकिन यदि हम ने अल्लाह की बात न मानी होगी तो फिर यह क़ुदरती process है यह चलेगा और देखें अल्लाह तआला कब तक इस बीमारी को जारी रखे।

★ एक वाकिफ-ए-नौ डाक्टर महमूद अहमद ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि प्यारे हुज़ूर हाल ही में मेरी तक़र्रुरी बतौर डाक्टर लाइबेरिया में हुई है इसलिए आपसे दुआ की दरख़ास्त करता हूँ और आप से रहनुमाई और हिदायत का तलबगार हूँ। हुज़ूर अनवर फ़रमाया : विशेष हिदायत यह है कि वहां जाके ख़िदमत की भावना से अफ़्रीक़ी लोगों की ख़िदमत करें, अफ़्रीक़ी क़ौम ऐसी है कि यदि सही तौर पर उनकी ख़िदमत करें उनसे अच्छा व्यवहार करें तो वे आप लोगों के शुक्रगुज़ार भी होते हैं और इस से उनको ख़ुशी भी होती है कि जमाअत हमारी ख़िदमत कर रही है और यदि अपना आचरण अच्छा नहीं दिखाएँगे तो एक वक़्फ़ डाक्टर की बजाय आप जमाअत को बदनाम करने वाले होंगे। इसलिए हमेशा याद रखें कि आप वहां अल्लाह की ख़ातिर ख़िदमत-ए-ख़लक़ की भावना से जा रहे हैं। इसलिए अल्लाह तआला को भी राज़ी करना है और लोगों की भी ख़िदमत करनी है और यह जज़बा हमेशा क़ायम रखना है।

★ हमारे एक और वाक़िफ़ नौ डाक्टर अथर अहमद सोहाग ने प्यारे हुज़ूर की ख़िदमत में दुआ की दरख़ास्त की और हिदायत तलब की कि मैं वक़्फ़ करके अब अहमद नगर में जमाअत के हस्पताल में काम शुरू करने वाला हूँ। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : मेहनत से काम करें और दुआ करें। पहले डाक्टर को मैंने नहीं कहा था उसके लिए भी यही हिदायत है उनको भी ये बातें याद रखनी चाहिएं कि रोगी को शिफ़ा अल्लाह तआला देता है। इसलिए हमेशा जब रोगी को देखें तो दुआ करके देखें। जब नुस्ख़ा लिखें तो नुस्ख़े के ऊपर **هو الشافی** लिखें। एक दफ़ा मैं ने ख़ुतबे में भी इस का वर्णन किया था। और फिर जब रोगी को देख लो तो रात को जो नमाज़ें पढ़ो तो नमाज़ में उन मरीज़ों के लिए दुआ करो जिनको देखा हो कि अल्लाह तआला उनको शिफ़ा दे और हाथ में शिफ़ा रखे और बरकत डाले। और हर रोगी से ख़ुशअख़लाक़ी से पेश आओ। ख़ुशअख़लाक़ी से पेश आओगे तो रोगी की आधी बीमारी डाक्टर की बातों से ही दूर हो जाती है और आधी बीमारी फिर दवाईयां दे के दूर होती है और इस तरह अल्लाह तआला आपके हाथ में शिफ़ा रखेगा। अधिक से अधिक रोगी आपके पास आएँगे और अल्लाह तआला आप के लिए उनको शिफ़ा अता करेगा, इन शा अल्लाह।

अल्लाह तआला यह मुलाक़ात हर लिहाज़ से बाबरकत करे, आमीन।

(धन्यवादसहित अख़बार अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 23 फ़रवरी 2021)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad